भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 09 | उदयपुर शनिवार 15 मई 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

महामारी : संकल्पित हो बचना ही मुख्य उपाय

– डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'–

महामारी और उसमें भी जनपदीय की अपेक्षा वैश्विक संकट हो तो वैयक्तिक सवाल नहीं, सामुदायिक स्तर पर सोचा जाता है। जनपद ध्वंस के रूप में कौशांबी में हुई संगती पर पुनर्वसु अत्रि का लंबा वर्णन संसार का पहला महामारी का दस्तावेज है। यह काल विडंबना का होता है, निराशा ही निराशा होती है। इस अवधि में प्रमुख संस्कारों, वरण, चयन, अग्न्याधान आदि को स्थगित करने का निर्देश मिलता है।

ऐसी विषम स्थिति में राजा बनने के योग्य राजकुमार का राज्याभिषेक नहीं होता है। अध्ययन करते हुए द्विज विद्या नहीं पाते तथा सुनते हुए भी सुन नहीं पाते हैं। अग्न्याधान करना चाहनेवाले आधान नहीं करें। गृहनिर्माण न करें। परिणय की इच्छा रखनेवाली कन्या अथवा काम्यकर्मों में इष्टपति अग्नि का आधान न करें...।

महामारी और उसमें भी जनपदीय की अपेक्षा वैश्विक संकट हो तो वैयक्तिक सवाल नहीं, सामुदायिक स्तर पर सोचा जाता है। महर्षि चरक ने जो कुछ कहा, उस पर पहले मैंने विचार किया। जनपद ध्वंस के रूप में कौशांबी में हुई संगती पर पुनर्वसु अत्रि का लंबा वर्णन संसार का पहला महामारी का दस्तावेज है।

(अर्णव – वाराणसी, जून, 2020, में मेरा लेख)

मार्कंडेय पुराण, देवी पुराण, भागवत में देवियों ने अनेक सावधानियां कही। सैंकड़ों स्तोत्र और कवच पाठों में बहुत आर्त स्वर मिलते हैं। नारायणीय के लगभग हर श्लोक में पीड़ा के शमन की प्रार्थना है।

मरकी और बाधा नाशक प्रार्थना हनुमान बाहुक, बजरंग बाण, चंद्रशेखर स्त्रोत, मार्कंडेय स्त्रोत आदि में भी है। उत्तर मध्यकाल में सबसे ज्यादा कवच सामने आए,

क्यों? क्योंकि, महामारी से राजा भी नहीं बचा सकता था और घर में बैठे-बैठे उसका पाठ करते रहना किसी कोरेंटायन से कम नहीं था। इस काल में घर-घर कवच पहुंचाए गए।

दूरी है अधूरी / मास्क है जरूरी

आथर्व परिशिष्ट भारतीय जन जीवन में उपजे उन विचारों का संग्रह है, जो विपन्नता से लेकर समृद्धि तक हो सकते हैं। इन विचारों की व्याप्ति कालांतर में अनेक ग्रंथों में उपायों के रूप में मिलती है।

रोग, उपसर्ग, उत्पात और महामारी में शांति उपाय इसका अनूठा प्रतिपादन है। इसमें दो राय नहीं कि ऐसे ग्रंथ हमारे पास नहीं मिलते। जॉर्ज मेलविल बोलिंग और जूलियस फॉन नेजलीन ने 1909 में इसको रोमन लिपि में संपादित कर प्रकाशित किया था।

(अथर्वहृदय नामक 69 परिशिष्ट विचारणीय है।)

मित्रवर श्री भवनाथ झा ने उक्त अथर्वहृदय परिशिष्ट के उन निर्देशों को हमारे सामने रखा है जो महामारी और इति जन्य संकट होने पर स्वीकारे जाते थे। यह काल विडंबना का होता है, निराशा ही निराशा होती है। इस अवधि में प्रमुख संस्कारों, वरण, चयन, अग्न्याधान आदि को स्थगित करने का निर्देश मिलता है।

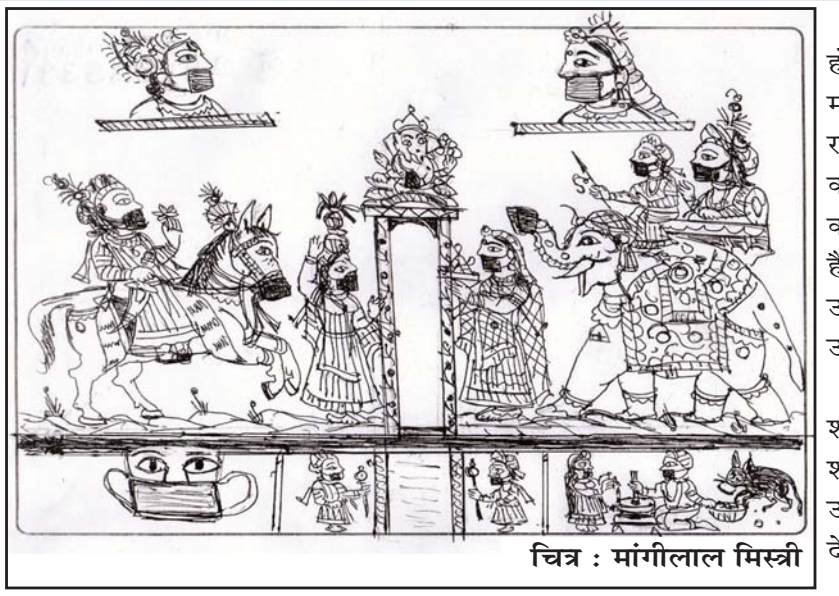

चित्र : मांगीलाल मिस्त्री

उपस्थिते राज्यनाशे महारौरव एव वा।
दुर्भिक्षे मरके वापि अनावृष्टिभयेऽपि वा ॥
(69,4.1)

सर्वं राष्ट्रे विनश्येत सस्यं शलभमूषकैः।
अकस्मान्निर्जला वा स्यादशोषा वा महासरित्॥
(69,4.2)

तथान्येष्वप्यनुक्तेषु घोरेषूपस्थितेषु च।
कुर्युः शान्तिमथर्वाणो द्विजा ह्येतेषु भेषजम्॥
(69,4.3)

लभते राज्ययोग्योऽपि न राज्यं राजनन्दनः।
पठन्न लभते विद्यां द्विजः शृण्वन्नपि श्रुतम्॥
(69,4.4)

आधित्सुरपि नाधानं कुर्यादावासमेव च।
कन्या परिणिनीषुर्वा काम्येष्विष्टपतिं न च॥
(69,4.5)

इनका अभिप्राय है कि राज्यनाश उपस्थित होने पर, महारौरव की स्थिति में, दुर्भिक्ष, महामारी और अनावृष्टि (अकाल) का भय रहने पर, सम्पूर्ण राष्ट्र में फसल उत्पाद कीट कोप तथा चूहों से नष्ट हो जाती है। अकस्मात् कभी न सूखनेवाली नदियाँ तक सूख जाती हैं। इस प्रकार की और भी घोर परिस्थितियां उत्पन्न होने पर अथर्ववेद के ज्ञाता को शान्ति उपाय करना चाहिए।

(अद्भुत सागर के सैकड़ों पृष्ठ ऐसी शान्तियों से भरे हैं। बल्लाल सेन के शासनकाल में ऐसे संकट आए होंगे, जिनके उपाय राजा को स्वयं लिखने पड़े और वे देशभर में भेजे गए थे।)

यह भी कहा गया है कि ऐसी विषम स्थिति में राजा बनने के योग्य राजकुमार का राज्याभिषेक नहीं होता है। अध्ययन करते हुए द्विज विद्या नहीं पाते तथा सुनते हुए भी सुन नहीं पाते हैं। अग्न्याधान करना चाहनेवाले आधान नहीं करें। गृहनिर्माण न करें। परिणय की इच्छा रखने वाली कन्या अथवा काम्यकर्मों में इष्टपति अग्नि का आधान न करें...।

राक्षस संवत्सर में बहुत सावधानी रखनी होगी। बचना ही मुख्य उपाय है। इसके लिए संकल्पित हों कि निर्देशों का पालन हर स्तर पर हों। वायरस वर्षण जन्य त्रासदी में गदगिरि संकट मिलकर टालना होगा...।

कोरोना से जुड़े तीन तुक्तक

(1)
दीवालों पर मास्क लगाये, हाथी घोड़े के चितराम
जू में बंद-खुले जीवों में, कोरोना के आये नाम
क्या ही अजब पहेली है
भीड़ उमड़ती रेली है
शहर ही नहीं धीरे-धीरे, दस्तक देता गामोगाम।

(2)
कोरोना नहीं मूर्ख, मारता जो नियमों का करे उल्लंघन
बचके रहो महा मानव तुम, धरती पर हो सर्वश्रेष्ठ जन
संयम ही जीवन अनुशासन
सब जीवों की रक्षा ही धन
अभी समय है उठो, करो, जागो जगती के जीवन बन।

(3)
धरती पर आरहे देवता, मास्क लगाकर धीरे-धीरे
तुम मनुष्य हो चतुर कागले, डेढ़ अकल के बनते हीरे
क्या तुम दानव दैत्यज हो
रावण कंशज लैत्यज हो
नदी किनारे सी दूरी रख, प्यास बुझाओ तीरे-तीरे।

पोथीखाना

वामन से विराट का लेखा देते बालकवि वैरागी

'वामन से विराट बालकवि वैरागी' पर लिखी पुस्तक डॉ. पूरन सहगल की अति आत्मीयतापरक भावांजलि है जिसका प्रत्येक शब्द उस बूंद की तरह सारे आकाश का बांसों उछलता आभास कराती है। यह अंजलि पूरे समुद्र की अगणित लहरों पर बिठाकर उस विराट दिव्यता की परिदक्षिणा कराती अंगीरस में सराबोर कर देती है जिसका ओरछोर पाना मुश्किल ही है।

डॉ. सहगल वैरागीजी के वामन रूप के साक्षी रहे और बालकवि अपने विराटपन में भी वामन के शहद का स्वाद लेते रहे। बड़प्पन और संस्कार तथा संस्कार और बड़प्पन का यह मेल अन्यत्र दुर्लभ मिलेगा। 'फकीराई मौज और कबीराई खरी-खरी' जीने वाले बालकवि न तो किसी वट वृक्ष के नीचे सोये और न किसी कल्पवृक्ष के नीचे बैठ किसी मनोकामना की ही आकांक्षा की।

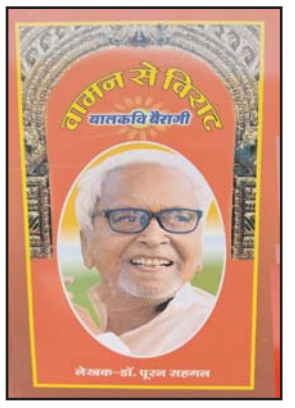

धर्म और कर्म में बालकवि वैरागी ने कभी घालमेल नहीं किया। सदैव पारदर्शी रह दोनों को प्रदूषण मुक्त रखा। उनके जीवन का यह नीति-सूत्र ही बन गया- 'साहित्य मेरा धर्म है, राजनीति कर्म।' वे कांग्रेसी रहे तो अन्त तक देसी रहे। पार्टी ने जब-जब उन्हें खड़ा किया वे जीते भी तो हारे भी। हारने पर मायूसी में उन्होंने कभी हरिनाम नहीं भजा और ताल ठोक कर बुलन्द बनने में भी कोई संकोच नहीं किया। कह दिया- **'राजनीति मेरे पांव की जूती है और साहित्य सिर का साफा। जिस समय यह जूती मेरे पांव को काटने लगेगी, मैं उसी क्षण उसे उतार नंगे पैर बढ़ जाऊंगा पर सिर की पगड़ी का सम्मान प्राण देकर भी खण्डित नहीं होने दूंगा'** और ललकारी हूंकार भर हजारों की उपस्थिति में एलान कर दिया-

अगर प्रेम से नहीं मिला तो लेंगे हम तकरार से।
लेखाजोखा तो लेंगे ही हम अपनी सरकार से।।

बालकवि वैरागी, डॉ. महेन्द्र भानावत तथा डॉ. पूरन सहगल

वे थे ही क्या? जिसके पास कुछ नहीं होता वही कुछ, बहुत कुछ होता है। वे फकीर थे। जो फकीर होता है वही हद और अनहद दोनों को साधता है। होने को वे हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। हिन्दी उनके प्राणों में बसी थी तो निज भाषा मालवी उनकी जीवजड़ी थी। इसी कारण वे अंग्रेजी में छपे निमंत्रण न स्वीकारते और न किसी समारोह में शरीक होते।

उन्होंने तो राष्ट्रपति अब्दुल कलाम साहब का किसी संगोष्ठी का अंग्रेजी में छपा निमंत्रण तक ठुकरा दिया और उनको पत्र लिखकर विनम्रतापूर्वक अपने विचारों से अवगत भी करा दिया। ऐसा जोश, जज्बा और होश! है किसी भी पार्टी से बंधे बंदे में!

डॉ. सहगल लिखते हैं, 10 फरवरी 1930 को उदित हुए नंदराम वैरागी के अपंग पिता द्वारिकादास सारंगी वादक समधुर गायक थे जो मानस की चौपाइयों से पूरे मोहल्ले को सरसब्ज रखते थे। उनकी भी बड़ी मधुरकंठी भजनी थी। उनके साथ वैरागीजी का बस्ती में जाकर आटा-रोटी की मंगत करना जैसे उनका पारम्परिक अधिकार ही बन गया था।

वे द्वार-द्वार 'रामजी की जै' बोल भिक्षा की झोली फैलाते। अचरज यदि है तो यही कि अपने प्रारम्भ से अन्तिम दौर तक वे प्रात:कालीन भोजन में अनिवार्यत: रोटी रात की बची हुई खाते ताकि उन्हें अपने अतीत की याद बनी रहे।

वैरागीजी ने कईबार कहा भी सहगल तब मेरे लिए **'रामजी की जै' आज के एटीएम जैसा था। 'रामजी की जै' का कोड लगाओ, रोटी हाजिर। रामजी के साथ छल करने पर रामजी आसाराम और राम रहीम बनाने में देर नहीं करते।** (पृ.10)

सन् 1957 में पूरनजी का पहलीबार वैरागीजी से परिचय हुआ। तब से लेकर वे जब-जब मनासा रहे, प्रतिदिन प्रात: साढ़ा आठ से साढ़ा नौ बजे तक उनसे मिलते ही मिलते। यह मेलमिलाप का सिलसिला अन्तिम दिन 13 मई 2018 तक रहा। **उनकी अन्तिम इच्छा 'राजनीति से राजरोग से मरे नहीं बैरागी' पूर्णत: पूरी हुई बल्कि उनके नाखून तक में कोई रोग नहीं आया और वे बिना कोई आहट दिये गुपचुप चले गये।**

पुस्तक के अन्त में भावांजलि रूप कुछ के आत्मीय विचार दिये हैं। उनमें सूर्यकान्त नागर बालकवि का जीवन उन तमाम लोगों के लिए प्रेरणादायक मानते हैं जो निराशा के गर्त में डूब जीवन की बाजी हार जाते हैं। (पृ. 96)

मीनाक्षी नटराजन ने अठाना की एक सभा में जब उनकी कुशलक्षेम पूछी तो बोले, 'चिन्ता मत करो ठहाका लगाता हुआ ही जाऊंगा।' (पृ. 97)

विष्णु वैरागी अन्तिम दिन की हकीकत बताते लिखते हैं- 'बाबू सलीम चौपदार के पेट्रोल पम्प का उद्घाटन कर साढ़े तीन बजे राजीखुशी घर पहुंच आराम किया। साढ़े चार बजे भूरा चाय लेकर आया। तीन बार आवाज लगाकर फिर चाय बना लाया। देखा, वैरागीजी गहरी नींद में सोये ही हुए हैं। ईश्वर ने उनकी कामना सवाई-ड्योढ़ी पूरी की। नि:शब्द, एकांत, अकस्मात मृत्यु दी। अन्तिम समय में केवल वे थे और उनका ईश्वर उनके पास था।' (पृ. 103)

डॉ. पद्मुम्न भट्ट ने वैरागीजी को लोहे को कंचन बना देनेवाला पारस बताया जबकि अर्जुन पंजाबी ने उन्हें जाननेवालों से ज्यादा चाहनेवाले बिरले शख्सियत कहा। डॉ. माधुरी चौरसिया ने तो उनसे प्रेरित हो बालकवि वैरागी महाविद्यालय ही प्रारम्भ कर दिया। डॉ. वेदप्रताप 'वैदिक' ने उनकी याद में लिखा, 'जब पहलीबार वे मुझसे मिलने आये तो खाना खाने के बाद डाइनिंग टेबल के नीचे फर्श पर ही लेट गये क्योंकि वह उन्हें ठण्डा लग रहा था। वे अपने मित्रों और प्रशंसकों द्वारा भेंट दिये गए कपड़े ही पहनते थे। एक चायवाला प्रधानमंत्री बनने पर गर्व कर सकता है तो एक मंगते का मिनिस्टर बनना तो उससे भी बड़ी बात है।' (पृ. 116)

अब कुछ मेरी भी कहदूं। बालकवि से मेरा परिचय भी कम समय का नहीं। जैनी होने के नाते वे दीवाली, होली, नयावर्ष दिवस के साथ क्षमापना दिवस पर भी काव्यमय उद्भावना कार्ड अवश्य लिख भेजते। प्राय: अन्तर्देशीय पत्र लिखते। ऐसे करते 50 से अधिक पत्र मेरे पास मिल जायेंगे। उनके साथ यात्रा-प्रवास भी मैंने किया।

अपने सम्प्रति संस्थान द्वारा 'लोकसाहित्य की चुनौतियां' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में उनके साथ डॉ. सहगल भी आये। 08 जनवरी 2011 के इस यादगार आयोजन का जिक्र करते सहगलजी ने लोक पर वैरागीजी के विचारों पर मूल्यवान सार देते लिखा- उनकी निगाह में भाषा, भूषन, भवन, भोजन और भजन ही लोक की पहचान थी। उनके लिखे अनेक मालवी गीत लोकस्वीकृत परिवर्तन-परिवर्धन के साथ लोकगीत हो गये। कुछ में उनके नाम की छाप होने पर भी वे उनके नहीं रहे। बाल्मीकि लोकस्वीकृत नहीं हुए पर तुलसी हो गये। (पृ. 45)

पूरी पुस्तक कदम-कदम पर वैरागीजी को हृदयस्थ करती अश्रु विगलित किये रहती है। ऐसी अनुभूति लेखक डॉ. सहगल को तो हुई ही, पाठकों को भी होती है और कोई अचरज नहीं, वैरागीजी होते तो उन्हें भी अवश्य होती। अब मुझे वह रात खलती है जब हमारे ही भारतीय लोककला मण्डल के मंच पर एक कवि सम्मेलन में वैरागीजी ने उद्घोष किया था, 'डॉ. महेन्द्र भानावत जहां भी बैठे हों, कृपया मंच पर आकर मुझसे अवश्य मिललें।' मैं नहीं गया। सबकी निगाहों में आकर बड़ा नहीं बनना चाहता था। फलस्वरूप अपने निवास पहुंच एक पत्र द्वारा उन्होंने विनम्रता से मुझे लिखा, 'उस दिन कवि सम्मेलन में आपसे मिलने को मैंने मंच पर घोषणा की थी। आप थे पर मिले नहीं।' सच है, वक्त चला जाता है पर बात बनी रहती है।

पुस्तक के प्रारम्भ में ही अपनी 'अनुभूति' में सहगलजी ने यह लिखकर मुझे कुछ कहने जैसा नहीं रखा। वे लिखते हैं, 'वामन के अलावा मैं चार वामन अवतारों को और भी जानता हूं जिन्होंने पृथ्वी ही नहीं नापी बल्कि आकाश नापने का भी पूरा प्रयास किया। उनमें लाल बहादुर शास्त्री, पं. रामनारायण उपाध्याय, डॉ. महेन्द्र भानावत और स्वयं दादा बालकवि वैरागी। इन सबने अपने-अपने संघर्षों के बलबूते आकाश तक को नापने का केवल प्रयत्न ही नहीं किया बल्कि नाप कर भी दिखा दिया।' मालव लोकसंस्कृति अनुष्ठान, मनासा (मध्यप्रदेश) से प्रकाशित 120 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य मात्र 100 रूपया है। **-म. भा.**

एक अर्थवान कृति 'राजस्थानी ध्वनि विज्ञान'

राजस्थानी भाषा व साहित्य में चर्चित एवं लोकप्रिय हस्ताक्षर बी. एल. माली 'अशांत' की नवीनतम कृति 'राजस्थानी ध्वनि विज्ञान' को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पढ़ने पर सुखद आश्चर्य इस बात का हुआ कि ध्वनि विज्ञान जैसे कठिन एवं गंभीर विषय पर कलम चलाकर बी. एल. माली ने अपनी प्रतिभा, सामर्थ्य एवं कौशल को विद्वद्जनों के समक्ष रेखाकिंत किया है। यह रेखांकन विद्वत् वर्ग को यह सोचने का अवसर प्रदान करता है कि राजस्थानी भाषा का भी अपना स्वयं का ध्वनि विज्ञान है।

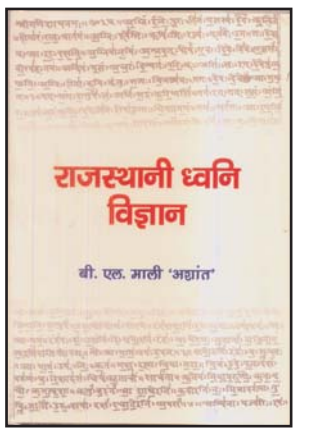

इस तथ्य को उजागर करने के लिये लेखक ने राजस्थानी की प्राचीनता के सन्दर्भ में ऋग्वेदिककालीन लोक-भूगोल और तत्कालीन लोक-भाषा को आधार बनाकर अपनी बात को आधिकारिक रूप से स्थापित करने के लिये सर्वमान्य सिद्धान्तों और मौलिक अभिमतों द्वारा राजस्थानी ध्वनि विज्ञान की प्राचीनता को प्रतिपादित किया।

लेखक ने स्पष्ट किया है कि मरूभाषा ही राजस्थानी भाषा है तथा राजस्थानी भाषा विज्ञान में मरूप्रदेश के धोरों एवं मगरों-मगरियों की भाषा, ध्वनि का जीवन्त रूप तथा मुख से निकलनेवाली ध्वनि को यहां के मनुष्य ने बोली के माध्यम से सुरक्षित रखी है।

लेखक की दृष्टि में ध्वनि धरती का स्पंदन है। अर्थ उसकी आवाज है। ध्वनि बीज है। शब्द उसका फल है। फल और भाषा ध्वनि की फुलवाड़ी है, और इस फुलवाड़ी की वह बेल है। ध्वनि विज्ञान इस बीज का अध्ययन है।

यह अध्ययन छह अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में ध्वनि का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा उपध्वनि विज्ञान, द्वितीय में ध्वनि के अंग और वर्ग, तृतीय में ध्वनि में होने वाले परिवर्तन, दिशाएं, घोषीकरण, अल्पप्राणीकरण, महाप्राणीकरण, आदेश, आगम, लोप, बिपर्यय, समीकरण, वषमीकरण, मूर्धन्यीकरण, मात्रा-भेद तथा अल्प परिवर्तनों को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय में उच्चारित ध्वनि का वर्गीकरण, स्वर-व्यंजन के भेद, स्वरों-व्यंजनों का वर्गीकरण, प्रयत्न, स्थान, स्वरतंत्रियां प्राणत्व, उच्चारण शक्ति, ह्रस्व, दीर्घ तथा सबसे बड़े पंचम अध्याय में मात्रा, आघात, सुर, सुर की लहर, स्वर-संगम, अक्षर, राजस्थानी ध्वनि-स्वर, व्यंजन, कारक, शब्द-भेद, ध्वनि को नापने के आधुनिक यंत्र, ध्वनि के ख्यात नाम, नियम, लिप्यंकन आदि को प्रस्तुत करने का सराहनीय काम किया है। अंतिम अध्याय में राजस्थानी ध्वनि रचना तथा ध्वनि-विधान पर संक्षिप्त टीप दी गई है।

लेखक का यह श्रमपूर्ण प्रयास कितना प्रामाणिक और अर्थवान है, यह भाषा-वैज्ञानिक ही स्पष्ट कर सकते हैं। आशा है, अन्य विद्वान भी इस ओर अध्ययन के लिए अग्रसर होंगे। पुस्तक की छपाई, सफाई और गेटअप सराहनीय है।

-डॉ. देव कोठारी

स्मृतियों के शिखर (123) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अग्निनर्तक जसनाथी सिद्धों के कुलगुरु सूर्यशंकर पारीक

बीकानेर में पढ़ते हुए सन् 1955 से 1958 के बीच मैं पहलीबार अग्नि पर नाचनेवाले आनुष्ठानिक नृत्यकारों के कुलगुरु सूर्यशंकरजी पारीक से उनके निवास पर मिला। उसके बाद भी जब कभी बीकानेर जाना हुआ, उनसे अवश्य भेंट की। याद पड़ता है 09 नवम्बर 1976 को प्रात:काल ही मैं उनके घर पहुंच गया तब वे अपने नित्यनियम से निवृत्त ही हुए थे। मेरे साथ जैन कॉलेज के व्याख्याता प्रो. सतीश मेहता थे।

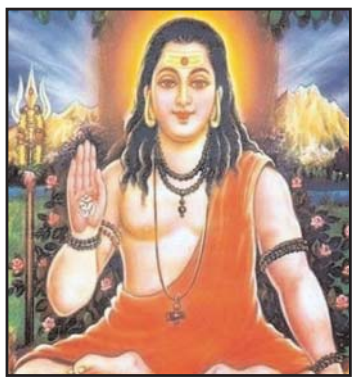

सूर्यशंकरजी पूर्व परिचित थे अत: जानकारी प्राप्त करने में कोई परेशानी नहीं हुई। मैंने बताया कि इस बार इस क्षेत्र की शोधयात्रा के सिलसिले में ही मेरा इधर आना हुआ। इसका एक उद्देश्य आपसे भेंटकर अग्निनृत्य के बारे में प्रामाणिक जानकारी लेना था। मेरा यह सौभाग्य है कि आप जैसे विद्वान कुलगुरु का मुझे सान्निध्य प्राप्त होरहा है।

लगभग दो घण्टे की बातचीत के दौरान पारीकजी से मुझे अग्निनृत्य की परम्परा, इसके प्रारम्भकर्त्ता जसनाथजी, कुलगुरु का महत्त्व तथा राजस्थान में इस सम्प्रदाय की मान्यता एवं आयोजन-अनुष्ठान से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान जानकारी प्राप्त हुई।

पारीकजी ने बताया कि इस सम्प्रदाय में कुलगुरु बड़ी मूल्यवान भूमिका का निर्वाह करता है। उसके आदेश के बिना कोई धार्मिक तथा जीवनधर्मी संस्कार पूर्ण नहीं होते। गुरु ही गुरुमन्त्र द्वारा दीक्षित करता है।

कुलगुरु जागरण कोई समाजी दिला सकता है। गुरु को निमंत्रण देने पर उसका समग्र खर्च, भेंट-भेंटावण सिद्ध-सेवक उठाता है। जागरण वाला गुरु को नगारे की भेंट चढ़ाता है। गुरु संन्यासी नहीं होकर गृहस्थ होकर भगवाधारी होता है। नगारे की जो भेंट मन्दिर अर्थात् बाड़ी में लगती है वह गुरु की होती है।

उन्होंने बताया कि मन्दिर में सेवा-पूजा करनेवाला 'पोळिया' कहलाता है। यह मन्दिर में ही रहता है। कुलगुरु फेरी पर जाते हैं। यह फेरी 'रमणी' नाम से जानी जाती है। विरक्तों की मण्डली 'परमहंस मण्डली' कही जाती है। सम्पद्राय के अनुयायी दो प्रकार के होते हैं। एक सिद्ध होते हैं जो सिर पर भगवा पगड़ी बांधते हैं और सेवा-पूजाधारी हैं। दूसरे जसनाथी जाट जो अन्य जाटों की तरह ही हैं।

सभी ठिकानों तथा भक्तों, महन्तों, सेवकों में ये विशेष श्रद्धा एवं आस्था से पढ़ी जाती हैं। इसी दिन संध्या को उन्होंने मुझे यह नृत्यायोजन भी दिखाया। मैं यथासमय पहुंच गया जिसके कारण इस नृत्य को प्रारम्भ से अन्त तक की समस्त प्रक्रियाओं से रू-ब-रू होता अनेक बार रोमांचित होता रहा।

राजस्थान में मारवाड़ के कतरियासर, लिखमादेसर, मालासर, साधासर, नौरंगदेसर, पूनरासर जैसे कई सारे सर और अन्य गांव जसनाथी सिद्धों के प्रमुख स्थल बने हुए हैं। इनमें 'बाड़ी' नाम से परिचित जसनाथी मन्दिर में मेले भरते हैं और जुम्मे जागरण के साथ-साथ अग्निनृत्य के आयोजन होते हैं। वाले भी ये ही सिद्ध और नाचने वाले भी ये ही सिद्ध हैं जहां नगारे और मजीरे की जोरदार जगरन में सबद, बानियों तथा भगत-चरित्रों का विविध राग-रागिनियों में अलाप करते हैं। भगवी पगड़ी और गेरुई वेशभूषा में निहंग सिद्ध लोग एक अजीब बातावरण बना देते हैं और उधर नृत्य की तैयारी होती है।

नृत्य के लिए शमी वृक्ष की ढेर-सी लकड़ियां एकत्र कर एक चबूतरा-सा बना दिया जाता है। इन लकड़ियों की आंच बहुत तेज होती है। लकड़ियां जलकर जब अंगारों

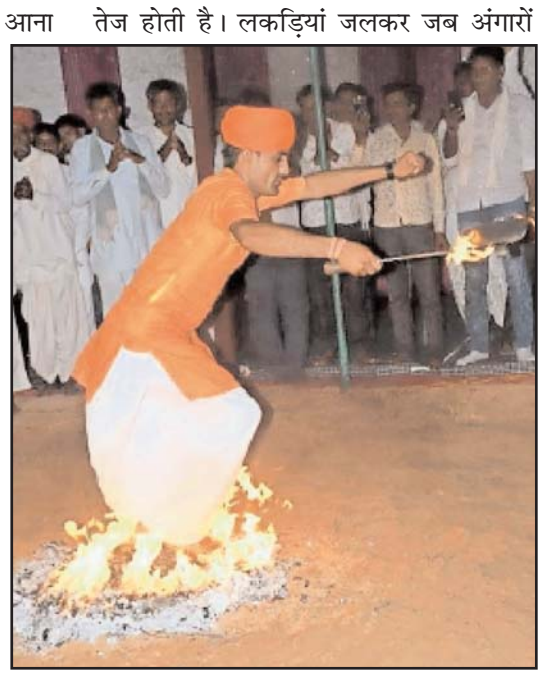

के रूप में दहकने लगती हैं, तब गायक विशेष सबद गाना प्रारम्भ कर देते हैं। वाद्य तेज कर लिये जाते हैं और देखते ही देखते गायक मण्डली के आगे विविध मुद्रायें निकालने वाले जसनाथी अंगारों पर धमकते हैं। वे तेज धधकते अंगारों की अंजुलियां भर-भर

उछालते हैं जैसे पानी की बूंदें उछाली जाती हैं। कभी मुंह में अंगारों को भरकर उसकी फुहारें छोड़ते हैं जैसे हाथी अपनी सूण्ड से पानी की फुहार छोड़ता है और कभी अंगारों की झोलियां भर-भरकर उचक-निचक करते हैं। आग इनके लिए तब एक खेल बन जाती है। राजस्थान का बीकानेर जिला इन अग्नि नर्तकों के लिए जगप्रसिद्ध है।

यह कोई तन्त्र-मन्त्र या टोटका नहीं, केवल सिद्धाचार्य जसनाथजी की असीम कृपा है जिसके रहते 'फतै-फतै' कहकर अग्नि-कूदकों का यह आश्चर्यजनक कमाल देखते ही बनता है।

जसनाथजी का आविर्भाव बीकानेर के कतरियासर नामक गांव में वि. सं. 1539 तदनुसार कार्तिक शुक्ला एकादशी शनिवार को हुआ। ऐसी प्रसिद्धि है कि यहां के जाणीजाट हमीरजी को ये डाबला तालाब पर पड़े मिले। हमीरजी नि:सन्तान थे अत: इस शिशु को पाकर वे और उनकी पत्नी रूपादे अति प्रसन्न हुए। बालक का बड़े लाड़-प्यार से पालन-पोषण हुआ और उसका जसवन्त नाम रख दिया गया।

आगे जाकर जंगल में चरती ऊंटनियों को ढूंढ़ते हुए इस बालक को गुरु गोरखनाथ मिले जिन्होंने इसके कान में सत्य शब्द फूंक दिया फलस्वरूप बारह वर्षीय बालक जसवन्त से जसनाथ हो गया। इसी जसनाथ के नाम पर जसनाथी सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ। कुलगुरु सूर्यशंकरजी ने बताया कि राजस्थान में सिद्धों के दो हजार घर हैं। पांच ठिकाने, बारह धाम, चौरासी बाड़ी तथा एक सौ आठ स्थापना हैं।

इस सम्प्रदाय में रहने वाले के लिए 36 नियम पालने आवश्यक हैं। इन नियमों की चलू लेकर जो प्रतिज्ञा करता है वही जसनाथी कहलाता है। सिद्ध लोग गृहस्थी होते हैं। अपने सिर पर भगवे रंग की पगड़ी धारण करते हैं तथा जसनाथी मन्दिरों की सेवा-पूजा करते हैं। अपने गले में ये लोग सात गंठी काला धागा भी पहनते हैं जो इनके कुलगुरु का दिया होता है।

24 वर्ष की आयु में जसनाथजी समाधिस्थ हुए अत: इनकी समाधि की पूजा होती है। भगवे रंग का निसांण होता है। कतरियासर, लिखमादेसर, छाजूसर, पूनरासर, मालासर, तथा पांचला सिद्धों का ; ये ऐसे स्थान हैं जो बड़े पवित्र माने जाते हैं और इनकी इस सम्प्रदाय में विशेष मानता गिनी जाती है। अग्नि नृत्य को बाद में प्रसिद्ध सन्त रूस्तमजी ने मूर्त रूप दिया।

जसनाथी सिद्धों में रात्रि जागरण तथा अग्नि नृत्य दोनों प्रसिद्ध हैं। ये दोनों प्राय: साथ-साथ होते हैं अत: जहां-जहां रात्रि जागरण होता है वहां-वहां अग्नि नृत्य का आयोजन हो ही जाता है। यह आयोजन कुलगुरु के सान्निध्य में होता है। अग्नि नृत्य से पूर्व लकड़ियां जलाई जाती हैं।

शमी को खेजड़ अथवा फोग भी कहते हैं। इनकी लकड़ियों से कोई सात फीट लम्बा, चार फीट चौड़ा और तीन-चार फीट ऊंचा चबूतरा-सा बना लिया जाता है जो 'धूणा' कहलाता है। गायक मण्डली में से एक आदमी नगारे की जोड़ी को अपनी हथेलियों से बजाता है और ओंकार जैसी ध्वनि का अलाप करता है।

दोनों ओर बैठे पांच व्यक्ति अपने हाथों में लम्बी डोरी के मजीरे बजाते हुए ओंकार ध्वनि को उठाते हैं। 'धूणा' के चारों ओर पानी का छिड़काव कर दिया जाता है। पास ही घी की अखण्ड जोत जलती रहती है। कुलगुरु हवन करता है फिर चार व्यक्ति उठकर गुरु को पाट पर बिठाकर माला पहनाते हैं। गुरु तब 'सिद्धों गायबो आरम्भ करो' कहकर उन्हें आलाप प्रारम्भ करने को कहता है।

तीन सबद जसनाथी के गाये जाते हैं। चौथा पद नाचणियो सबद होता है। सिद्ध रूस्तमजी सबद के साथ नाचणिये नाचना प्रारम्भ करते द्रुतगति से धूणा की परिक्रमा कर गुरु को नमस्कार करते हैं। थोड़ी देर गुरु के आगे नाचते हैं तत्पश्चात गुरु इन्हें आग में नाचने का आदेश देता है।

नृत्य करने वाले कई बार अंगारों के ढेर में प्रवेश करते हैं और निकलते हैं। इस समय विशेष सबद गाया जाता है। वाद्यों की गति तेज हो जाती है।

नगारों की थापी का ध्यान रखते हुए सिद्ध 'फतै-फतै' कहते हुए दहकते अंगारों की शरण में प्रवेश कर जाते हैं और उन अंगारों को कभी हाथ में उठाते हुए, कभी मुंह में डालकर दर्शकों की ओर फैंककर, कभी उन्हें दांतों से पकड़कर, कभी पैरों से रौंदकर, कभी उन्हें हथेली में लेकर मतीरे की तरह फोड़कर तो कभी झोली भर-भर नानाप्रकार के कलात्मक खेल खेलते हैं।

इनके साथ ही ये नाचणिये इन अंगारों से मतीरा फोड़ना, हल जोतना, खलिहान निकालना तथा अन्न को डालकर हवा में उपणना जैसी क्रियाएं भी बड़े सुन्दर रूप में दिखाते हैं।

यह दृश्य ऐसा होता है जब देखनेवाले रोमांचित हो उठते हैं परन्तु खेलनेवाले आग में ऐसे खेलते हैं जैसे होली पर फाग खेल रहे हों। आग के साथ राग और फाग का ऐसा अनोखा खेल जसनाथियों के अलावा अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता।

सूर्यशंकरजी अच्छे लेखक हैं। उन्होंने मुझे अपनी लिखी सिद्ध चरित्र, जीवन समझोतरी सरोधो, सूरज कुंडालो, गौर ब्यावलो, धरती, सिद्ध जसनाथ ज्ञान ग्रन्थ पुस्तकें भी दीं।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 मई 2021

सम्पादकीय

कोरोना की बढ़ोतरी सहानुभूति की चढ़ोतरी

कोरोना इतना पसर गया कि उसने कोई जगह, कोई कोना नहीं छोड़ा। जैसे लहर पर लहर चढ़ती उतरती है वैसे ही कोरोना की परत-लहर अपना प्रभाव, भाव लिए सबको भय का भूताल्या देती लगती है। टीवी अखबार ही नहीं, जन-जन भी कोरोना की खबर के अग्रणी खबरनवीस बने मिलते हैं। पुराने सारे अकाल भी कोरोना ने पछाड़ दिये हैं।

इस बीच भविष्यवक्ता भी गर्म तवे पर अपनी रोटी सेकते जो भविष्यवाणी कर रहे हैं उस पर पाठक भी कम आंख गढ़ाते नहीं मिलेंगे। मौसम विज्ञानी भी चेतने लगे हैं तो अनेक दलाली, कलाली, तस्करी, काली कमाई, मुनाफाखोरी, चोर बाजारी, लूट खसोटी करने वाले यमराज के पूत भी अपनी सपूती दिखाने में पीछे नहीं हैं। इस बीच तीसरी लहर की उठक-बैठक भी दस्तक लेने को है। अब तक बच्चे बचे हुए थे अब उन्हें भी सावधान रहने की टोकर बजनी शुरू हो गई है।

यह सब देखते सुनते सबमें इतना भय व्याप्त हो गया है कि कहने को कोई शब्द नहीं, नि:शब्द हैं। एक मास्क से थोड़ी बहुत स्वांस ले-दे रहे थे अब दो-दो मास्क लगाने की जैसे रेड पड़ रही है और घर में भी मास्क मस्ट की बुलन्दी फरमान पर है। देवता चुप हैं। तालाबन्दी सड़कों पर ही नहीं, मन्दिरों के भी है और देवता गर्भगृह में बिराजमान हैं। जो बाहर हैं वे मास्क पहने हैं। न आप उनके दर्शन कर सकते हैं और न वे ही भक्तों को निहार रहे हैं।

भौगोलिक, प्राकृतिक से लेकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सारी संरचनाएं बालजाल में लोचन उलझाने जैसी औंधे खाट हैं। ऐसी विषमतर स्थिति में भी वाह रे जगत में स्वर्ग हमारा देश! तुमने चुनाव करवा दिये। रैलियां निकलवादी। भाषणबाजी द्वारा अपना आफरा निकाल दिया। कुम्भ स्नान का पुण्य अर्जित कर लिया। हम कौन थे? क्या हो गये? और क्या होंगे अभी की समस्या पर विचार मंथन करने की बजाय अपना नाक नीचे होने या कटने पर भी सवा बैंत बढ़ने की रटन लगाते जलते बांसवन की अगन बुझाने की बजाय बांसुरी बजाते 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' की ही राग अलापने में मस्त हो।

इस सबके बावजूद हम महाभारतीय लोग सहानुभूति का पृष्ठ संगीत देकर चुनावी रणबांकुरों को अधिकाधिक सफलता दिलाने में पीछे नहीं हैं। चुनाव में हमने देख लिया, समझ लिया कि हमारे देश की जनता यों तो धार लेती है तो अच्छेअच्छों की पीतल निकाल देती है पर मुश्किल वक्त में जैसे कोरोना रोगी के लिए ऑक्सीजन असरकारी होती है वैसे ही चुनावी उम्मीदवार के लिए भारतीय जनमानस सहानुभूति देने में सदा आगे रहता है।

मध्यावधि चुनाव में जिनका निधन हो गया, उनकी जगह उनके परिजनों को जनता ने सहानुभूति वोट देकर विजयश्री दिलाई वहीं बंगाल में ममता दीदी ने पांव पर पलस्तर बांध आराम करने की बजाय व्हीलचेयर पर चलकर जगह-जगह वोट प्राप्ति के लिए अपना पक्ष प्रबल रूप में रखते बड़ी बुलन्दगी की बहादुरी दिखाई तो जनता ने उनकी मांदगी पर सहानुभूति दिखाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

मजे की बात यह रही कि सारे अखबार और चैनल भाजपा की ही जीत का शंखनाद करते रहे पर बिना कोई आहट दिये जनमानस की संवेदनशील सहानुभूति ने अपना जादुई प्रभाव दिखाते ममता को अप्रत्याशित विजय दिला दी और इसे जादू-पर-जादू ही कहा जाएगा कि परिणाम आते ही ममता दीदी का रोगी-पांव यकायक चुस्त-दुरस्त बन खड़ा हो गया और चल पड़ा।

विनोद जैन द्वारा ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट का निर्माण

उदयपुर (वि.)। उदयपुर में ऑक्सीजन की कमी को दूर करने के लिए एसआरजी हाऊसिंग फाईनेंस लि. के प्रबंध निदेशक विनोदकुमार जैन ने 70 लाख रूपये में आरएनटी मेडिकल कॉलेज में ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट का निर्माण करवाने की घोषणा की है।

श्री जैन ने बताया कि 11 मई को आचार्यश्री पुलकसागरजी के 51वें अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में कम्पनी ने उदयपुर में ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट का निर्माण करवाने का निर्णय लिया। आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. लाखन पोसवाल से स्वीकृति प्राप्त की। महावीर युवा मंच संस्थान के संरक्षक राजकुमार फत्तावत मुख्य सहयोगी बने। गेंदालाल फांदोत ने बताया कि इस ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट में प्रतिदिन 97 सिलेण्डर भरने की क्षमता होगी।

कोरोना पीड़ित गांव भगवान भरोसे .....

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

हमारे टीवी चैनल और अंग्रेजी अखबार शहरों की दुर्दशा तो हमें काफी मुस्तैदी से बता रहे हैं लेकिन देश के एक-दो प्रमुख राष्ट्रीय स्तर के हिंदी अखबार हमें गांवों की भयंकर हालत से भी परिचित करवा रहे हैं। मैं उन बहादुर संवाददाताओं को प्रणाम करता हूं, जिन्होंने पत्रकारिता का धर्म सच्चे अर्थों में निभाया है।

पहली कहानी है उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले के 13 गांवों की। इन गांवों की आबादी 1 से 7 हजार तक की है। इन सभी गांवों में लोग थोक में बीमार पड़ रहे हैं। 500 आदमियों के गांव में 400 आदमी बीमार हो गए हैं। बड़े गांवों में पहले हफ्ते-दो हफ्ते में एक मौत की खबर आती थी।

अब रोज़ ही वहां शवों की लाइन लगी रहती है। अगर आप लोगों से पूछें कि इतने लोगों को क्या हुआ है ? तो वे कहते हैं कि खांसी-बुखार है। पता नहीं यह खांसी-बुखार उनकी जान क्यों ले रहे हैं? उनसे पूछो कि आप लोग जांच क्यों नहीं करवाते? तो वे कहते हैं कि यहां गांव में आकर उनकी कौन डॉक्टर जांच करेगा?

डॉक्टर तो 50-60 किमी दूर कस्बे या शहर में बैठता है। 50-60 किमी दूर मरीज़ को कैसे ले जाया जाए? साइकिल पर वह जा नहीं सकता। इसीलिए गांव में रहकर ही खांसी-बुखार का इलाज करवा रहे हैं। उनसे पूछा कि इलाज किससे करवा रहे हैं तो उनका जवाब है कि जिलों की ओपीडी तो बंद पड़ी हैं। यहां जो झोलाछाप पैदली डॉक्टर घूमते रहते हैं, उन्हीं की गोलियां अपने मरीजों को हम दे रहे हैं। वे 10 रुपये की पेरासिटामोल 250 रुपए में दे रहे हैं।

कुछ गांवों के सरपंच कहते हैं कि हमारे गांव में कोरोना-फोरोना का क्या काम है? लोगों को बस खांसी-बुखार है। यदि वह एक आदमी को होता है तो घर में सबको हो जाता है। जब सर्दी-जुकाम की सस्ती दवा की कालाबाजारी गांवों में इतनी बेशर्मी से हो रही है तो कोरोना की जांच और इलाज के लिए हमारे ग्रामीण भाई हजारों-लाखों रुपये कहां से लाएंगे? ऐसा लगता है कि इस कोरोना-काल में हमारी सरकारों और राजनीतिक दलों को बेहोशी का दौरा पड़ गया है। जनता की लापरवाही इतनी ज्यादा है कि उप्र के पंचायत चुनावों में सैकड़ों चुनावकर्मी कोरोना के शिकार हो गए लेकिन जनता ने कोई सबक नहीं सीखा।

ऐसा ही मामला राजस्थान के सीकर जिले के खेवरा गांव में सामने आया। गुजरात से 21 अप्रैल को एक संक्रमित शव गांव लाया गया। उसे दफनाने के लिए 100 लोग पहुंचे। उन्होंने कोई सावधानी नहीं बरती। उनमें से 21 लोगों की मौत हो गई। ऐसी हालत उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश के कई अन्य गांवों में भी हो रही है लेकिन उसका ठीक से पता नहीं चल रहा है।

देश के गांवों को सिर्फ सरकारों के भरोसे कोरोना से नहीं बचाया जा सकता। न ही उन्हें भगवान भरोसे छोड़ा जा सकता है। देश के सांस्कृतिक, राजनीतिक, समाजसेवी, धार्मिक और जातीय संगठन यदि इस वक्त पहल नहीं करेंगे तो कब करेंगे?

आचार्य नानेश शताब्दी स्मारिका

आचार्य नानेश अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के प्रभावी आचार्य हुए हैं। उनके जन्मशताब्दी वर्ष पर श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ, उदयपुर ने 'अप्रतिम महायोगी आचार्यश्री नानेश' नाम से बड़ी ही उपयोगी, मूल्यवान तथा स्मरणीय स्मारिका का प्रकाशन किया है। शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ के आचार्यश्री विजयराजजी म. सा. प्रथम प्रभावी आचार्य हैं।

आचार्यश्री नानालालजी म. सा. 'नानेश' का जन्म उदयपुर जिले के छोटे से गांव दांता में हुआ। तीन वर्ष इनका वैराग्यकाल रहा और 19 वर्ष की उम्र में पूज्य गणेशलालजी म. सा. से दीक्षा ली। 23 वर्ष की अवस्था में युवाचार्य बने और उसी वर्ष आचार्य पद पर आरूढ़ हुए।

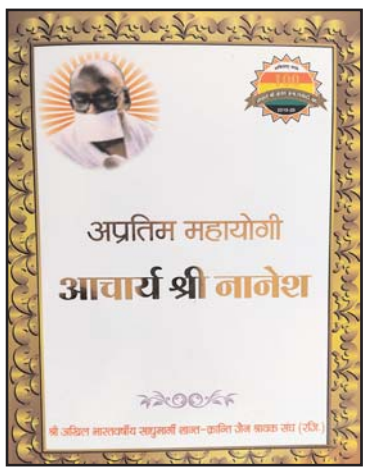

इन्होंने अपने समय में 59 सन्तों तथा 310 सतियों को दीक्षा दी।

प्रस्तुत स्मारिका भी इन्हीं आचार्य को समर्पित की गई है जिनकी समता विभूति, समीक्षण ध्यानयोगी तथा धर्मपाल प्रतिबोधक के रूप में जैनेतर समाज में भी विशिष्ट पहचान है।

डॉ. हंसा हिंगड़ के दृष्टिवान एवं विद्वतापूर्ण सम्पादन में प्रकाशित 450 पृष्ठीय यह स्मारिका क्रमशः भावांजलि, लेखांजलि, काव्यांजलि, शोधांजलि, मुक्तांजलि, सूक्तांजलि नामित विविध खण्डों में विभक्त होकर 160 से अधिक भावपरक, बोधगम्य, सुपथगामिनी, शोधानुसंधानी, सर्वोपयोगी रचनाओं से संग्रहणीय बन पड़ी है। आचार्यश्री के पारदर्शी जीवन के अनुकूल ही प्रस्तुत स्मारिका का हंसदर्शी संयोजन अत्यन्त ही मनहर बन पड़ा है। इसका मूल्य 500 रूपया है। - **डॉ. तुक्तक भानावत**

पत्रिकाएं : अक्षर की देह अमर

पत्रिकाएं एक ऐसी देह होती हैं जिनके भाग्य में उसका निष्प्राण होना लिखा होता है लेकिन एक देह ऐसी होती है जो कभी निष्प्राण नहीं होती। जिसकी आंखों की पुतलियां सदैव सवेरों को तलाश करती हैं। जिनके कान अपने आसपास के सरोकारों की हरेक आहट को सुनते हैं और जिनका कण्ठ कभी मौन नहीं होता।

यह माना जाता है कि भारतेन्दु के समय से ही साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन की सधी-बधी परम्परा विकसित हुई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ईसवी सन् 1867 में 'कविवचन सुधा' को प्रकाशित किया। इसके बाद 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' जो बाद में 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के नाम से निकली का प्रकाशन हुआ। उन्होंने 'बाला बोधनी' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित की जो महिला सुधार पर केन्द्रित थी। 'कविवचन सुधा' के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित होता था, 'अपधर्म छूटै सत्व निज भारत गहै।' इन पंक्तियों में भारत के सत्व की गरिमा का आख्यान था।

साहित्य अमृत, समावर्तन, समकालीन साहित्य, दस्तावेज, वागर्थ, भाषा, नया ज्ञानोदय, अहा! जिन्दगी, तद्भव, अकार, हंस, कथादेश, आलोचना, पाखी, परिक्रमा, आजकल, साक्षात्कार व अक्षरा जैसी साहित्यिक पत्रिकाएं निकल रही हैं जिनमें हमारे आज के साहित्य की विभिन्न विधाओं में किए जा रहे सृजन को देखा जा सकता है। कला पर केन्द्रित पत्रिकाएं, जैसे 'कला समय', 'कला संवाद' व 'कला प्रयोजन' भी निकल रही हैं तथा इतिहास पर केंद्रित 'इतिहास बोध' नामक पत्रिका भी इलाहाबाद से प्रकाशित हो रही है।

- नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, परछाई का सच से साभार

आखातीज पर वर्षीतप के पारणे

हमारा देश धर्मप्रधान है इसलिए कर्मप्रधान भी है। अपने जीवन को सात्विक, संयमित, सदाचारी तथा संवेदनशील बनाने के लिए समय-समय पर यहां अनेक धर्मगुरुओं, आचार्यों, तीर्थंकरों एवं साधु-संन्यासियों ने जन्म लेकर अपने उपदेशों, अनुभवों तथा शिष्यों के माध्यम से मानव का मार्गदर्शन करते आत्मोद्धार का सन्देश दिया।

आखातीज 14 मई को सम्पन्न वर्षीतप के पारणे के दौरान कुलदीप नाहर तथा उनकी बहिन सुश्री मीनू नाहर अपनी माताश्री के साथ

श्रीमती तेजादेवी को इक्षुरस से पारणा कराते पति नवरत्न नागोरी

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने हजारों वर्ष पूर्व हमें तप का महत्त्व समझाते वर्ष भर निराहार जीवन व्यतीत किया। तब से लेकर अन्तिम चौइसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी तक अनेक अनुयायियों, धर्माचार्यों तथा सुधी श्रावकों ने इस परम्परा का निर्वाह करते जीवन सार्थक किया। आज भी निर्बाध रूप से यह सिलसिला प्रवहमान है।

तप से जीवन कुन्दन बन निखार पाता है। इससे प्रत्येक अंग-प्रत्यंग यहां तक कि रोम-रोम तक स्पंदित होता है। ऐसे तपोनिधि साधक-आराधक अभिनंदित होकर हमारे लिए वन्दनीय हैं। अपनी तपस्या पूर्ण कर ऋषभदेव ने वैशाख शुक्ला तृतीया को समापनोत्सव मनाया।

यह उनका मुनिवेश का प्रथम तपस्याकाल का प्रथम आहार ग्रहण दिन था जिसका श्रेय राजा श्रेयांस को प्राप्त हुआ।

कहा जाता है कि इसी दिन भगवान कृष्ण ने अपने मित्र सुदामा द्वारा भेंट किये चावल के बदले असीमित समृद्धि प्रदान कर सुदामा को चकित कर दिया था। युधिष्ठिर को वनवास के दौरान अक्षयपात्र मिला जिसका अन्न कभी समाप्त नहीं हुआ। त्रैता ुयग का प्रारम्भ भी इसी दिन से हुआ। इसी दिन विवाह करने वालों का प्यार स्थायी बना रहता है और पितरों के तपर्ण से भी अक्षयपाल की प्राप्ति कही गई है।

इस दिन समग्र चराचर जीवों में विशेष उत्साह, मंगल तथा उल्लासजनित हलचल देखी गई। इसी कारण यह दिन अक्षय तृतीया, आखा तीज के रूप में लोकजन में प्रचलित हुआ। पूरे वर्ष में इस दिन को श्रेष्ठ मांगलिक अविनाशी दिवस कहा जाता है।

डॉ. रेखा जैन अपने पीहर इंदौर में

कानोड़ में देवीलाल भाणावत अपनी पत्नी के साथ

भगवान ऋषभदेव के पदचिन्हों का अनुगमन करते वर्तमान में भी अनेक जैन और जैनेतर समुदाय के सन्त-श्रावक वर्ष भर ही तपोनिष्ठ बने रहते आखा तीज को समापन के रूप में किसी तीर्थ क्षेत्र अथवा धर्मगुरु के सान्निध्य में पारणा करते हैं। इस दृष्टि से यह दिवस परम धार्मिक तथा कल्याणकारी पुण्योदय के रूप में मान्य है।

लोकदेव के रूप में भगवान ऋषभदेव की मान्यता कहीं कृषि के देवता तो कहीं भूमि रक्षक भोमियाजी के रूप में है। वे दिन के करणहार दिनकर के रूप में भी पूजित हैं तो असंख्यों में जिनवर, आदीश्वर, दीनानाथ, करूणाकर, ऋद्धिसिद्धि के दाता, तारणहार, पालनहार भी हैं। उनकी प्रतिमा पर केसर का लेप उन्हें केसरियानाथ, केसरिया बाबा के रूप में भी पहचान दिये है। काले पत्थर की मूर्ति के कारण वे कालिया बाबा के रूप में आदिवासी समाज में विशेष मान्यता प्राप्त हैं जहां उनके नाम की सौगन्ध अथवा आध भी चलती है।

अन्ततः आखा तीज के इस अत्यन्त ही पावन प्रसंग पर पारणाधारी उन सभी तपधारी महान तपस्वियों के भाल पर चन्दन का टीका देते वन्दन अभिनंदन करते हैं और किसी कवि कि इन पंक्तियों के साथ अपना स्वर देते हैं -

तुमने तिल-तिल तापी काया /
छोड़ी देह-मोह और माया
ज्योति जगाई जग में, अग में
जिस पर सांप जहर देते हैं /
तपसीजी तुम वह चन्दन हो।
तपोनिधि तुमको वंदन हो।।
तुमने परम आत्म पहचाना /
साधु संत मुनि जिन को जाना
कंचन काया की छलनी में /
पतझर में बसंत को छाना
कीचड़ में जड़ देकर भी तुम,
पंकज से निखरे स्पन्दन हो।
तपोनिधि तुमको वंदन हो।।

- अनिता नागोरी

अपना देश अपनी संस्कृति

ठगी बहुरूपिया

एक वक्त था जब देवगढ़ के बहुरूपियों का कोई सानी नहीं था। इस क्षेत्र में भांडों ने अपनी कला-करिश्माई से दूर-दूर तक नाम कमाया। बड़ों-बड़ों को भ्रमित करने में भी महारत हासिल की। महाराणा सज्जनसिंह (1875-85 ई.) को भी उनके मुसाहिबों ने इस क्षेत्र के भांडों की प्रशंसा में कहा कि वे अपनी कला में बड़े पटु और पहुंचे हुए होते हैं। किसी को ठग लेना तो उनके बायें हाथ का खेल है। इस पर महाराणा ने चुटकी लेते हुए कहा कि मुझे भी कोई ठगकर दिखाए तो जानूं।

यह खबर भांडों के कानों में पड़ी। महाराणा को ठगना अपनी जान को जोखिम में डालना था। कोई तैयार नहीं हुआ मगर बहुरूपियों के लिए यह जबर्दस्त चुनौती थी। एकबार एक साधु ने महलों के पास अपना डेरा लगाया। लम्बी जटा, हष्ट-पुष्ट डीलडौल, कांतिमान चेहरा तथा ध्यान, योग, तंत्र एवं ज्योतिष विद्या का वह बड़ा जानकार था। जो भी उसके पास गया, चमत्कृत हुए बिना नहीं लौटा।

केलवा गांव के परसराम बहुरूपिया ने यह घटना सुनाते हुए बताया कि साधु के चमत्कारों से आमजन ही नहीं, विशिष्टजन भी बड़े प्रभावित हुए। महाराणा के पास खबर पहुंची। साधु के दर्शन की इच्छा जाहिर करने पर महाराणा का पदार्पण करवाया गया। विदा होते वक्त साधु ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि पूर्वजन्म के यश-प्रताप से आपको महाराणा की पदवी प्राप्त हुई। धन धान्य, ऋद्धि-सिद्धि की कोई कमी नहीं रहेगी। आपको कुछ समय हरि स्मरण में व्यतीत करना चाहिए।

लौटते समय महाराणा की दृष्टि साधु द्वारा फेरी जा रही बड़े-बड़े आकर्षक मनकों वाली माला पर पड़ी। दो दिन बाद महाराणा को साधु की कही हरि सुमिरण वाली बात याद आई। उन्होंने वह माला मंगवाने के लिए कहा। साधु ने खुशी-खुशी माला दे दी। जब उसकी कीमत पूछी गई तो दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए साधु बोला कि माला का क्या मोल, यह तो लाख की है। महाराणा के खजाने से एक लाख रूपया चुका दिया गया।

कड़ाके की सर्दी के दिनों में महाराणा ने अंगीठी के पास बैठकर माला फेरना शुरू किया। अंगीठी की तेज आंच से माला का मनका पिघलने लगा। महाराणा बड़े अचरज में पड़ गए।

मुसाहिबों से इसका जिक्र किया। पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि वह साधु फर्जी था। उसका नाम जोधा भांड था। वह देवगढ़ का रहने वाला था। महाराणा ने उसकी चतुराई, कलाबाजी और हिम्मत की प्रशंसा की तथा शाबाशी कहलवाई।

हवेली में चुड़ैल का कमाल

हवेलियों के ठाठ, उनकी ठसक, करतूतों, करिश्मों, करनामों, षड़यंत्रों, पोपलीलाओं, रंग-मिजाजों एवं उत्सव -आयोजनों के कई किस्से इतिहास के पन्नों में तो नहीं चढ़ पाए परन्तु लोक-कण्ठों पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी रंगत जमाए हुए हैं। ऐसा ही एक किस्सा महाराणा सज्जनसिंह के जमाने का है।

श्यामसुन्दर व्यास (85) ने बताया कि भटियाणी चोहट्टे की बारहठजी की हवेली के स्वामी रामसिंह बारहठ थे। देर रात्रि को वे कुंभलगढ़ के पास के गांव पानेर से चले। वह रात बड़ी भयानक थी। घना अंधेरा था। जंगली जानवरों का बड़ा खौफ था। रोम- रोम कंपा देनेवाली हवा थी। डरावनी वृक्षावलियों, अजीबोगरीब शोरगुल में घोड़ा भड़कते हुए चलरहा था।

इतने में एक भारी डील-डौल की बड़ी ही रूपवती महिला सामने आई। उसने बारहठजी के साथ चलने की विनती की। उसके स्वरों में करुणा, असहायपन और निर्जन स्थानों में भटकन का रूदन था। बारहठजी को दया आगई। उन्होंने उसे घोड़े पर बिठा लिया।

उदयपुर आकर वह उनकी हवेली में ही रहगई। दिन को गायब और रात्रि को हाजिर हो बारहठजी को वह शैय्या-सुख देती। इससे बारहठजी परेशान हो दिन-दिन दुबले होने लगे। एकदिन चारभुजा का पंडा आया। बारहठजी की चिंता भांप उसने उनको गले में बांधने की जेवड़ी दी। उस दिन से वह चुड़ैल बाहरठजी को कभी दिखाई नहीं दी किन्तु उन्हें लगा कि कमरे के बाहर खड़ी वह बारहठजी को जेवड़ी खोलने के लिए कह रही है।

इस घटना का पता महाराणा को लगा। सरदारों ने भी जब हालचाल सुने तो बहुतेरे उपाय किए। बारहठजी ने चारभुजानाथ का कमाल मान अलग से उनके नाम का मंदिर बनवाया। दरबारियों ने महाराणा से कहा - अन्नदाता वह चुड़ैल थी। **- म. भा.**

बाजार / समाचार

हिंदुजा फाउंडेशन ने चोपड़ा फाउंडेशन से हाथ मिलाया

उदयपुर (वि.)। हिंदुजा फाउंडेशन ने मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण के क्षेत्र में कदम रख रही है। चोपड़ा फाउंडेशन, जॉन डब्यू 14 ब्रिक मेंटल हेल्थ फाउंडेशन और सीजी क्रिएटिव्स के साथ मिलकर, यह फाउंडेशन, नेवल अलोन ग्लोनबल मेंटल हेल्थ (वर्चुअल) सम्मेलन के भीतर तीन घंटे के स्पॉडटलाइट इंडिया खंड का सह-प्रायोजन करेगा। इस वर्चुअल समिट को फेसबुक, यूट्यूब और अन्य मीडिया प्लेटफॉर्म पर 21 मई को लाइव स्ट्रीम किया जाएगा।

हिंदुजा समूह के सह-अध्यक्ष गोपीचंद पी. हिंदुजा ने कहा कि यह सम्मेलन मस्तिष्क के विकास के प्राकृतिक चक्रों और बचपन से वयस्कता तक मानव अनुभव की विविधता और हमारे ग्रह पर इसके प्रभाव का पता लगाने की दृष्टि प्रदान करेगा। अध्यक्ष, श्री पॉल अब्राहम ने कहा कि यह एकीकृत मंच साझा मानवता के लिए एक बैठक स्थान होगा। एक ऐसा स्थान जहां हमारे लेशंस का आदान-प्रदान कर सकते हैं और धरती को संपूर्ण एवं स्वास्थ्यवर्द्धक बनाने हेतु एकजुट हो सकते हैं।

द चोपड़ा फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. दीपक चोपड़ा ने कहा कि हमें हिंदुजा फाउंडेशन और देश-दुनिया के दिग्गजों के साथ सहयोग करने की प्रसन्नता है ताकि इस वैश्विक महामारी के चलते पल-प्रतिपल खो रही जिंदगियों के चलते पैदा हो रहे मानसिक विकृति को ठीक करने में मदद मिल सके।

बिग बाजार का दो घंटे में होम डिलीवरी ऑफर

उदयपुर (वि.)। कोरोना महामारी की दूसरी लहर के बीच ग्राहकों को सुरक्षित शॉपिंग का अनुभव देने के लिए फ्यूचर ग्रुप की हाइपरमार्केट रिटेल चेन बिग बाजार ने 'दो घंटे में होम डिलीवरी' पहल शुरुआत की है।

फ्यूचर ग्रुप के संस्थापक एवं सीईओ किशोर बियानी ने कहा कि उदयपुर में ग्राहक अब होम डिलीवरी के लिए ग्रॉसरी, कपड़े, घर एवं रसोई के सामान की विस्तृत रेंज से सामान चुन सकेंगे। इनमें ताजे फल एवं सब्जियां, अंडे, ब्रेड, चावल, आटा, दाल, नमक, चीनी आदि जैसे रोजाना के प्रयोग के सामान भी उपलब्ध होंगे। ग्राहक ताजा बेक किए हुए ब्रेड, कपकेप, कुल्चा और डेयरी उत्पाद भी मंगा सकेंगे। हम चाहते हैं कि महामारी के दौर में ग्राहक घर में सुरक्षित रहें। ग्राहक के प्रोडक्ट चुनने पर 2 घंटे के भीतर सामान घर पर डिलीवर कर दिया जाएगा। होम डिलीवरी के लिए वेबसाइट या बिग बाजार के एप पर ऑर्डर किया जा सकता है। मोबाइल एप को गूगल प्ले और एपस्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। यह सर्विस सुबह 8 से रात 8 बजे तक उपलब्ध होगी।

डिजिटल सेवा पोर्टल पर चैटबॉट 'एवा' लॉन्च

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक एवं कॉमन सर्विसेस सेंटर्स (सीएससी) ने अपने सीएससी डिजिटल सेवा पोर्टल पर चैटबॉट 'एवा' लॉन्च किया। इसका उद्देश्य विलेज़ लेवल एंटरप्रेन्योर्स को अंतिम छोर तक के ग्रामीण उपभोक्ताओं को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने में मदद करना है। एवा के द्वारा विलेज लेवल एंटरप्रेन्योर्स एचडीएफसी बैंक द्वारा प्रस्तुत उत्पादों व सेवाओं के बारे में जानेंगे, जिससे अंतिम छोर तक ग्राहकों के लिए सेवाओं में सुधार होगा।

जिंक द्वारा 100 बेड का एयरकंडीशन हॉस्पीटल

उदयपुर (वि.)। हिन्दुस्तान ज़िंक दरीबा में डीएवी स्कूल में 300 बेड के कोविड केयर सेंटर के लिये आवश्यक सहायता के साथ ही सामुदायिक केंद्र के सामने स्थित खेल मैदान में 100 बेड का एयरकंडीशन अत्याधुनिक कोविड फिल्ड हॉस्पीटल की स्थापना करेगा। इसमें 80 बेड ऑक्सीजन और 20 बेड आसीयू सुविधायुक्त होंगे। राजसमंद जिला कलक्टर अरविंद पोसवाल ने ज़िंक के इस सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि महामारी के दौरान आमजन के जीवन को बचाने में यह मील का पत्थर साबित होगा।

उल्लेखनीय है कि जिंक चिकित्सालयों और प्रशासन को वैक्सीनेशन वैन एवं 10 टन ऑक्सीजन की दैनिक आपूर्ति प्रदान कर सरकार को सहयोग कर रहा है। एयरकंडीशन इंफ्रास्ट्रक्चर एवं चिकित्सा उपकरणों के साथ अब तक 200 टन से अधिक लिक्विड ऑक्सीजन जिला प्रशासन को प्रदान की है। प्रति दिन 500 सिलेंडर की क्षमता वाला ऑक्सीजन बॉटलिंग प्लांट शुरू हो चुका है। पांच जिलों में क्रिटिकल केयर बेड, प्रशासन के साथ मिलकर चिकित्सालयों में आवश्यक उपकरण, आरटीपीसीआर मशीन, ऑक्सीजन सिलेण्डर, हाइपोक्लोराइट के छिडकाव, पीपीई किट एवं मास्क की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के प्रयास तेज किये जा रहे है।

ब्रेन का जटिल ऑपरेशन

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में 56 वर्षीय जस्सी योहानन के ब्रेन का ऑपरेशन बिना बेहोश किये किया गया।

वरिष्ठ न्यूरोफिजिशन डॉ. मनीश कुलश्रेष्ठ ने बताया कि मरीज को बोलने में तकलीफ के साथ ही चेहरे पर सुन्नपन महसूस हो रहा था। इसी कारण उन्हें अस्पताल में लाया गया था। एमआरआई व अन्य जॉचें करवाने पर पता चला की मस्तिष्क के बाएँ भाग में हेमरेज हो गया है। मरीज पूर्व में डायबिटीज, हायपोथाईराइड एवं ब्रेस्ट कैंसर से ग्रसित थी। मरीज का ट्यूमर ब्रेन के बोलने वाले भाग पर था। इस वजह से नई तकनीक जिसे अवेक सर्जरी कहते है, का इस्तेमाल कर इमरजेन्सी ऑपरेशन किया गया। तीन घंटे चले इस ऑपरेशन में मरीज डॉक्टर से बात करती रही। टीम में न्यूरोसर्जन डॉ. अजीत सिंह के अलावा एनेस्थिशिया विशेषज्ञ डॉ. नितीन कौशिक का विशेष सहयोग रहा। ऑपरेशन के बाद मरीज बिल्कुल स्वस्थ है एवं सभी से बाते कर रहीं है।

संयुक्त परिवार ही हमारी विरासत : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिह सारंगदेवोत ने अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस पर कहा

कि संयुक्त परिवार हमारी विरासत तथा जीवन का गुरूकुल है। विगत 3 दशकों से आधुनिकता की दौड़ में यह परम्परा घटती जा रही है लेकिन वैश्विक महामारी कोरोनाकाल में संयुक्त परिवार की कमी को महसूस किया जाने लगा है। इस काल में संयुक्त परिवार ही आगे बढ़ सका है। संयुक्त परिवार की कीमत घर से दूर होने के बाद ही पता चलती है। एकल परिवार की तरह परदेस में रहने वाले लोग या फिर अकेले रहने वाले जब कोरोना की चपेट में आये, तो सबसे पहले अपने परिवार की याद आई। दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-बहिन और गांव-घर के आस पड़ोस के लोगों का चेहरा नजरों के सामने आने लगा है। वे दिन याद आने लगे जब भरेपूरे परिवार छोटी मोटी बीमारियों से लेकर बड़ी-बड़ी परेशानियां घरवालों के हौंसलों से निपट लिया करते थे।

सुपर 65 डेजर्ट कूलर्स लॉन्च

उदयपुर (वि.)। ग्रुप एसईबी इंडिया की फ्लैगशिप कंपनी महाराजा व्हानइट लाइन ने एयर कूलर्स पोर्टफोलियो में प्रोवेव सुपर 65 डेजर्ट कूलर्स की नई रेंज को लॉन्चं किया है।

हनी कॉम्ब पैड के अनोखे और नए कॉन्सेप्ट से लैस ये एयर कूलर्स बेहद दक्ष और टिकाऊ हैं और गर्मियों में हर घर के लिए बिल्कु ल आदर्श विकल्प हैं। ये नए एयर कूलर आकर्षक बनावट के साथ तरह-तरह के आकार और रंगों में मिलते हैं।

इस कूलर को मैन्युली ऑपरेट करने के साथ रिमोट कंट्रोल से चलाने का भी उपभोक्ताओं को विकल्प दिया गया है । देश भर में ग्रुप एसईबी इंडिया के सभी 750 डिस्ट्रिब्यूटर्स और 40,000 डीलरों के पास यह कूलर्स उपलब्ध हैं। इन कूलर्स को कई ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से भी खरीदा जा सकता है।

इनकी कीमत 13,799 रुपये से लेकर 14,799 तक रखी गई है। प्रोवेव सुपर 65 सीरीज के ये कूलर उन भारतीय उपभोक्ताओं को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जो सक्षम और कमरे में हाई कूलिंग करने वाले कूलर खरीदना पसंद करते हैं। इसके अलावा ये एयर कूलर लंबे समय तक सालों-साल चलते हैं।

नारायण सेवा की ऑक्सीजन, भोजन और कोरोना किट वितरण सेवा

उदयपुर (वि.)। कोरोना की दूसरी लहर में शहरवासियों के सेवार्थ नारायण सेवा संस्थान की ऑक्सीजन-घर घर भोजन और कोरोना मेडिसन किट वितरण की सेवाएं निरन्तर जारी है।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि साधकों की टीम ने कोरोना संक्रमित परिवारों के घर-घर 1052 भोजन पैकेट पहुंचाए। इसके अलावा 9 ऑक्सीजन सिलेंडर और 22 कोरोना दवाई किट बीमारों को निःशुल्क प्रदान किये। अग्रवाल ने कहा कि संस्थान के हेल्पलाइन नंबर पर मदद चाहने वालों के प्रतिदिन 150 से अधिक फोनकॉल्स और व्हाट्सएप आ रहे हैं। संस्थान की विभिन्न टीमें एम्बुलेंस सेवा, सेनेटाइजेशन सेवा और राशन वितरण आदि कार्य भी पूर्ण सेवाभाव से कर रही है। उल्लेखनीय है कि संस्थान उदयपुर के अलावा मेरठ, परभणी, बड़ौदा में भी 17 अप्रेल से निःशुल्क सेवाये संचालित कर रहा है जहाँ हजारों लोग प्रतिदिन लाभान्वित हो रहे है।

स्टार एग्री व एग्रीबाज़ार का 2 करोड़ का योगदान

उदयपुर (वि.)। एग्री वेयरहाउसिंग एवं ऑनलाइन ट्रेडिंग कंपनी स्टार एग्री एंड एग्रीबाज़ार ने सरकार द्वारा संचालित अस्पतालों में दो करोड़ रूपए के 300 आयातित अत्याधुनिक ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर्स देने की घोषणा की है। यह अस्पताल जयपुर, अजमेर, अलवर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानर, कोटपूतली, भरतपुर, एवं जोधपुर में स्थापित हैं, जो कि देश में कोविड -19 की चुनौतियों का मुकाबला कर रहे है। यह ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर्सस कोविड -19 रोगियों के उपचार में सहायता करेंगे जिन्हे कोविड की दूसरी लहर में ऑक्सीजन की जरुरत है, यह 300 अत्याधुनिक कॉन्सेंट्रेटर्स सिंगापुर से आयात किये गए है।

एग्रीबाज़ार के सीईओ अमित अग्रवाल ने कहा की कोविड-19 की दूसरी लहर की चलते देश आज बड़े स्तर पर स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियों को झेल रहा है, इसके चलते यह हमारा नैतिक दायत्व है की इस महामारी के दौर से निकलने के लिए सरकार, मेडिकल समुदाय एवं रोगियों को जो भी संभव सहयोग की ज़रूरत हो, हम उसको पूरा कर सके।

बच्चे की भोजन नली से अंगूर का दाना निकाला

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट डॉ. पंकज गुप्ता, डॉ. धवल व्यास, डॉ. मनीष दोडमानी द्वारा नीमच निवासी 4 वर्षीय बच्चे की भोजन नली में फंसे अंगूर के दाने को एंडोस्कोपी कर सफलतापूर्वक निकाल नया जीवन दिया। डॉ. पंकज ने बताया कि बच्चा अभी बिलकुल स्वस्थ है एवं आराम से खा-पी रहा है। उन्होंने कहा कि कोई छोटा बच्चा गलती से सिक्का या कोई भी अन्य धातु निगल लगता है तो भोजन नली में घाव हो जाते हैं। ऐसे

में थोड़ी सी देर बहुत भारी पड़ सकती है। इसलिए बच्चा कुछ निगल ले तो बिना देर किये तुरंत हॉस्पिटल ले जाना चाहिए।

ऑक्सीजन बैंक का शुभारम्भ

उदयपुर (वि.)। सकल जैन समाज की अग्रणी संस्था भारतीय जैन संघटना की ओर से राज्य के अलग-अलग संभागों में ऑक्सीजन बैंक स्थापित किए गए।

प्रदेशाध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने बताया कि ऑक्सीजन बैंक में रखे इन कंसेन्ट्रटर को कोरोना संक्रमित मरीजों के ऑक्सीजन लेवल कम होने पर पांच दिनों के लिए नि:शुल्क घर के लिए दिया जाएगा। फत्तावत ने शीघ्र ही मोबाइल ऑक्सीजन सेवा प्रारम्भ करने की घोषणा की। इस अवसर पर उदयपुर में कंसेंट्रटर देने वाले भामाशाह गोधा फाउंडेशन, सुरेश राजकुमार चित्तौड़ा, अशोक छाजेड, कमलादेवी स्व. बाबूलाल कोठारी, दिनेश-मधु मेहता, प्रो. आर. एम. लोढा, श्रीमती रतनदेवी लोढा, मुकेश-रमेश खोखावत का उपरना ओढ़ाकर स्वागत किया गया।

उद्घाटन में नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र लुंकड़, राष्ट्रीय महामंत्री सम्प्रति सिंघवी ने अपनी वर्चुअल सहभागिता दर्ज कराई तथा संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, जिला कलेक्टर चेतन देवड़ा, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, महापौर जीएस टांक, उपमहापौर पारस सिंघवी, भाजपा जिलाध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, दिनेश कोठारी, दीपक सिंघवी, अरुण मेहता, अभिषेक संचेती तथा रैनप्रकाश जैन समारोह में मौजूद रहे।

कार्यक्रम से प्रेरित होकर उदयपुर के सामर परिवार की बेटी बैंगलोर प्रवासी संगीता पाटनी ने ब्रीथ इंडिया नामक मूवमेंट के साथ मिलकर 10 ऑक्सीजन कंसेंट्रटर तथा इंडिया इंफोलाइन ने 100 ऑक्सीजन कंसेंट्रटर उदयपुर बीजेएस को देने की सहमति प्रदान की।

अब बिना आईडी प्रूफ़ लग सकेगी जैन साधुओं को वैक्सीन

उदयपुर (वि.)। जैन साधुओं की आध्यात्मिक दिनचर्या व उनके कठोरतम नियमों को देखते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक नोटिफिकेशन जारी कर राज्य सरकारों को आदेश दिया कि जैन साधुओं को बिना किसी आईडी प्रूफ़ के वैक्सीन लगाई जाए। अब भारतभर में विचरण करने वाले साधु-साध्वी अपने नज़दीकी वैक्सीन सेंटर पर जाकर वैक्सीन लगवा सकते है।

ज्ञातव्य हो कि जैन साधु मकान, परिवार आदि सांसारिक भौतिक वस्तुओं का त्यागकर जैन दीक्षा स्वीकार कर लेते हैं इसलिए उनके पास किसी भी प्रकार का कोई आईडी प्रूफ़ नहीं होता है।

उल्लेखनीय है कि श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि सहित देशभर के विभिन्न जैन संगठनों ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर श्री हर्षवर्धनजी को पत्र लिखकर उनसे आग्रह किया था कि देशव्यापी टीकाकरण अभियान में जैन साधुओं को टीका लगवाने के लिए प्रूफ़ माँगे जा रहे हैं अत: आपश्री एक केंद्रीय आदेश ज़ारी कर जैन साधुओं को इस प्रूफ़ संबंधित समस्याओं से उनको मुक्त रखा जाए। जैन समाज की इस माँग पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक नोटिफिकेशन ज़ारी कर दिया है। नोटिफिकेशन ज़ारी होने पर जैन समाज ने मंत्री महोदय का आभार जताया है, व संत समाज से आग्रह किया है कि वे ज़रूर वैक्सीन लगवाएँ।

इन्टरनेशनल नर्सेज डे मनाया

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में इंटरनेशनल नर्सेज डे मनाया गया। डायरेक्टर विश्वजीत ने कहा कि कोविड 19 महामारी ने ना सिर्फ लाखों जिन्दगियों को परेशानी में डाला है बल्कि हमारी हैल्थकेयर मशीनरी पर भी गंभीर दबाव डाला है। बड़ी संख्या में डॉक्टर्स, नर्सेज और सर्पोट स्टाफ भी इस जानलेवा वायरस का शिकार बने है। उन्होंने नर्सों के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे कठिन समय में भी खुद की सुरक्षा की परवाह ना करते हुए मरीजों की सेवा और ईलाज के लिए लगे हुये हैं। उनकी प्रतिबद्धता इस महामारी में एक उम्मीद की किरण के समान है जिसके लिए मानवता कर्जदार है।

मां ! वो तुम्ही थीं ना..

-हेमेन्द्र सेठ-

जो सूरज की पहली किरण मुझ तक पहुँचे
उससे पहले अपने आँचल में छुपा लेती थी
बारिश की बूंदों से मुझको हमेशा बचा लेती थी
सुबह की ठंडी हवा हो या रात की कंप-कंपाती ठण्ड
मुझे अपनी गोद में सुला देती थी।
माँ! वो तुम्ही थी ना...
कहानियाँ सुनाकर
कठिन रास्तों पर चलना सिखाती तो थी,
पर एक कंकड़ भी मेरे पैर में लग जाए
तो मुझे अपनी गोद उठा लेती थी
आंधी-तूफानों से लड़ना सिखाती तो थी
पर आंधी की धूल मुझ तक पहुँचे उससे पहले
मुझे अपने आघोष में छुपा लेती थी।
अच्छाई-बुराई का पाठ पढ़ाती तो थी
पर कोई बुराई मुझ तक पहुँचे उससे पहले
तुम दीवार बन खड़ी हो जाती थी।
माँ ! वो तुम्ही थी ना...
फूलों की तरह मुस्कुराना सिखाती थी
तितलियों की तरह उड़ना सिखाती थी
मेरे जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए
अपने हाथों को
लाल, पीला, नीला, गुलाबी बना लेती थी।
ताने सुनती थी, बातें सुनती थी, आंसू बहा लेती थी
पर मेरी आँख से एक कतरा भी जमीं पर गिरे
उससे पहले मुझे खुशियों के सागर में डुबो देती थी।
माँ! वो तुम्ही थी ना...
घर की परिस्थितियाँ कैसी भी हो
मुझे अहसास ना होने देती थी
खुद भूखी रह जाती थी पर मुझे न भूखा सुलाती थी
पापा थक हार घर आते थे
उन्हें अपने हाथ खाना खिलाती थी
और पापा से झूठ बोल पानी पीकर ही सो जाती थी।
माँ! वो तुम्ही थी ना... ?
ना जाने तुम किस मिट्टी की थी
हर परिस्थिती में ढल जाती थी
सबकी खुशियों की ख़ातिर
अपनी खुशियाँ छुपा लेती थी।
मेरे जीवन में भगवान का एक वरदान थी
वो तुम्हीं थी ना ... ?
माँ! वो तुम्हीं थी न... ?

सेवाभावी भंवरलाल पोरवाल का निधन

उदयपुर (वि.)। महावीर युवा मंच के मार्गदर्शक, प्रेरक एवं संस्थापक सदस्य भंवरलाल पोरवाल का 63 वर्ष की उम्र में असामयिक निधन होगया। मंच के मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते कहा कि श्री पोरवाल ने प्रत्येक क्षेत्र में जमीनी योगदान देकर एक सरलमना सेवाभावी सेवक की छवि दी।

अध्यक्ष डॉ. स्नेहदीप भाणावत, महामंत्री विक्रम भंडारी ने कहा कि उन्होंने बिना किसी प्रचार-प्रसार के अनेक जरूरतमंदों की सहायता की और सबके संबल बने रहे। वे अनेक सार्वजनिक सेवाकारी संस्थाओं से जुड़े रह कोषाध्यक्षीय पद को शोभित किये रहे।

इस अवसर पर मंच के पूर्व अध्यक्ष सर्वश्री कुलदीप नाहर, भगवती सुराणा, निर्मल पोखरना, नीरज सिंघवी, राजेश चित्तौड़ा, आलोक पगारिया ,अर्जुन खोखावत, डॉ लोकेश जैन, मुकेश हिंगड़, अशोक लोढ़ा तथा अरविंद सरूपरिया ने भीगे मन से भंवरलालजी को शोकाभिव्यक्ति देते बताया कि उनके निधन से समाज, संगठन तथा व्यापार-वाणिज्य से जुड़े प्रतिष्ठानों ने दुख व्यक्त किया है।

ऑक्सीजन केअर सेंटर मील का पत्थर

उदयपुर (वि.)। जैन इंटरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन (जीतो) उदयपुर के सौजन्य से गत दिनों महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय में 'ऑक्सीजन केअर सेन्टर' का शुभारंभ प्रभारी मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास द्वारा किया गया जिसमें इमरजेंसी में आये हुए जरूरतमंद मरीजों को जरूरी इलाज ना मिलने तक वैकल्पिक रूप से ऑक्सिजन कान्सेनट्रेटर मशीन उपलब्ध कराना प्रारंभ कर दिया।

आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल के प्रोत्साहन व सहयोग से इस कार्य को जीतो उदयपुर अध्यक्ष राजकुमार सुराना और उनके सहयोगियों ने 3 घंटे के अति अल्पसमय में सम्पन्न कर दिया। इसके लिए कॉलेज व अस्पताल प्रशासन द्वारा उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की गई और इस सहयोग को मानवता की सेवा में मील का पत्थर बताया।

अध्यक्ष राजकुमार सुराना ने बताया कि जीतो उदयपुर बहुत जल्द महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय में एक ऑक्सीजन ऑन व्हील प्रोजेक्ट भी शुरू करने जा रहा है जिसमें इमरजेंसी के बाहर एक बस में ऑक्सीजन कान्सेनट्रेटर मशीन उपलब्ध कराई जाएगी। इस दिशा में काफी तेजी से कार्य किया जा रहा हैं।

जीतो के मुख्य सचिव कमल नाहटा ने डॉ. लाखन पोसवाल तथा अस्पताल प्रशासन को भरपूर सहयोग के लिए धन्यवाद दिया और जीतो उदयपुर के एफसीपी सदस्य किशोर भाई चौकसी का भी आभार जताया जिन्होंने इस सेवा कार्य हेतु 5 ऑक्सीजन कान्सेनट्रेटर मशीनों का नया सहयोग दिया।

भवानीशंकर गर्ग नहीं रहे

उदयपुर (वि.)। प्रख्यात प्रौढ़शिक्षा प्रयोगी भवानीशंकर गर्ग का 13 मई को 93 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। वे 1948 में सीतामऊ से आकर पं. जनार्दनराय नागर के साथ जुड़े और यहीं बस गये। पं. नागर के साथ कंधे से कंधा मिलाते उन्होंने गांवों में प्रौढ़शिक्षा का लालटेन शुरू किया तथा शनै:-शनै: उदयपुर में विभिन्न संस्थाओं को प्रारम्भ कर शिक्षा क्षेत्र में नवाचार प्रवृत्तियां प्रारम्भ कीं।

श्री गर्ग प्रौढ़शिक्षा के अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे। विद्यापीठ से समाज शिक्षण पत्र प्रारम्भ किया। स्कूल ऑफ सोशल वर्क प्रारम्भ किया। श्रमजीवी रात्रि कॉलेज, समाचार संस्थान जनपद जैसी प्रवृत्तियां शुरू की।

जब राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय बना तो जनार्दनराय नागर के बाद उसके कुलाधिपति बने। उनके निधन पर विविध समाज, संगठनों, संस्थाओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

उदयपुर की स्मृतियां लिए कीर्ति राणा (4)

वर्ष 2006 में कीर्ति राणा यहां दैनिक भास्कर के सम्पादक बनकर आये और करीब ढाई वर्ष रहे।

हमारे विशेष आग्रह पर उन्होंने उदयपुर प्रवास की स्मृतियां भेजीं जिन्हें शब्द रंजन के पाठकों के लिए प्रकाशित की जा रही हैं- सम्पादक

जयकांत शर्मा फोटोग्राफर :

भास्कर की मार्निंग मीटिंग के दौरान सिटी डेस्क के साथियों ने बताया कि पत्रिका के फोटोग्राफर जयकांत शर्मा जो काफी दिनों से बीमार थे, उनका निधन हो गया है। पत्रिका में काम कर चुकीं गीता सुनील के साथ ही रिपोर्टर संजय गौतम, फोटोग्राफर अख्तर खान, ऋषभ जैन आदि ने भी जो जानकारी दी उससे स्पष्ट हुआ कि वे उदयपुर के वरिष्ठ फोटोग्राफर इसलिए भी माने जाते हैं कि यहां के स्थानीय अखबारों में काम करने वाले अधिकांश फोटोग्राफरों को उन्होंने ही कैमरा पकड़ना सिखाया है।

स्टॉफ के साथियों की सुनने के बाद मैंने गीताजी से कहा आप भावनात्मक स्मृति शेष लिखिए, जिसमें ये सारी बातें भी आ जाएं जो आप लोग बता रहे थे। मीटिंग समाप्त होने के बाद सिटी चीफ प्रकाश शर्मा केबिन में आए और झिझकते हुए बोले सर, वो पत्रिका के फोटोग्राफर हैं। अपने यहां इतनी डिटेल में देना ठीक रहेगा क्या, आप एक बार (तब राजस्थान के स्टेट एडिटर हो गए) कल्पेश याग्निकजी के नॉलेज में डाल देते। मैंने कहा उदयपुर एडिशन का सम्पादक मैं हूं। तय मुझे करना है कि एडिशन में क्या दूं। फिर आप सब कह रहे हो कि वे उदयपुर के वरिष्ठ फोटोग्राफर हैं तो हम इस लिहाज से उनके विषय में छाप रहे हैं।

शाम को गीताजी ने स्मृति शेष लिखने की कोशिश की लेकिन मुझे नहीं जमा। नए सिरे से लिख कर लाने को कहा कि आप सब लोग सुबह जिस तरह से उनके विषय में बता रहे थे वो सारी बातें शामिल कीजिए।

उन्होंने पुन: जो लिखा वह उनके हिसाब से बेहतर था लेकिन मेरे मन मुताबिक नहीं था। गीताजी ने कहा, फिर सर आप ही ठीक कर दीजिए। उनकी कॉपी को लगभग नए सिरे से बेहतर बनाकर जब पेज पर लगवा रहा था तब गीताजी ने पेज देखा और बोलीं सर सारा लेख तो आपने लिखा है, नाम मेरा क्यों दे रहे हैं। मैंने कहा, जहां रिपोर्टर की सोच समाप्त होती है उसके बाद सम्पादक की सोच शुरु होती है। रिपोर्टर के काम को और बेहतर बनाना यह काम भी सम्पादक का है।

अगले दिन के अखबार में जयकांत शर्मा पर गीताजी के लिखे स्मृति शेष की चर्चा होना ही थी, क्योंकि पत्रिका ने बस सिंगल कॉलम समाचार छापा था, जयकांत शर्मा का निधन। इस खबर में यह भी उल्लेख नहीं था कि वे पत्रिका से जुड़े थे। उदयपुर की पत्रकारिता में भी ऐसा पहली बार हुआ था कि विरोधी अखबार ने इतनी प्रमुखता से फोटो-समाचार प्रकाशित किया। मेरी टीम के साथियों ने अगले दिन की मार्निंग मीटिंग में बताया कि पत्रिका की सिटी टीम के साथी जयकांतजी के तीन-चार फोटो सहित मैटर तैयार कर के सम्पादक राजीव हर्ष के पास ले गए थे लेकिन जयपुर मुख्यालय के निर्देशों के कारण उन्होंने असमर्थता व्यक्त कर दी। भास्कर में छपे स्मृति शेष पर वहां के स्टॉफ से सम्पादक को खरीखोटी भी सुनना पड़ी।

लेकसिटी प्रेस क्लब में राजनेताओं ने भी भास्कर के समाचार की सराहना की। चूंकि जयकांत शर्मा उदयपुर का परिचित नाम थे, लेकसिटी प्रेस क्लब ने भी श्रद्धांजलि सभा आयोजित की जिसमें सांसद किरण माहेश्वरी से लेकर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, यूआईटी चेयरमेन शिवकिशोर सनाढ्य, नगर परिषद अध्यक्ष रवींद्र श्रीमाली, वरिष्ठ समाजसेवी दलपत सुराणा, गणेश डागलिया आदि ने भास्कर में प्रकाशित लेख की सराहना करते हुए पत्रिका के फोटोग्राफर जयकांत शर्मा को श्रद्धांजलि दी।

यह चर्चा अपने-अपने अंदाज में उदयपुर के लोगों ने स्टेट एडिटर कल्पेश याग्निक तक भी पहुंचाई। उन्होंने फोन करके मेरे इस निर्णय को ठीक बताया। यह प्रसंग इसलिए भी शेयर करना जरूरी लगा कि सम्पादकों को काम करने की पूरी आजादी रहती है। बशर्ते वह इस आजादी का उपयोग किस एंगल से करें।

श्रद्धा गट्टानी को विश्वास नहीं हुआ कि कवरेज मिलेगा :

उदयपुर की झीलों की नगरी के रूप में भी पहचान है। इसलिए झीलों को बचाने, साफ रखने को लेकर भी अभियान चलते रहते हैं। गट्टानी ग्रुप द्वारा हर साल फतहसागर पर झीलों की सफाई वाला कार्यक्रम आयोजित करने में एक साल पत्रिका तो दूसरे साल भास्कर के बैनर तले इवेंट किया जाता था। उस साल निमंत्रण लेकर आईं श्रद्धा गट्टानी ने बड़े सकुचाते हुए निमंत्रण पत्र दिया और साथ में यह भी कहा कि इस साल पत्रिका के साथ इवेंट कर रहे हैं तो आप तो हमें कवरेज देंगे नहीं। वो निमंत्रित करने की औपचारिकता पूरी कर के चले गईं।

जिस दिन इवेंट होना था। मार्निंग मीटिंग में एक फोटोग्राफर को कवरेज करने के लिए कहा तो टीम ने याद दिलाया कि सर पत्रिका वाले मीडिया पार्टनर हैं। मैंने समझाया कि वो गट्टानी ग्रुप, मुस्कान क्लब के मीडिया पार्टनर है झीलें तो अपने उदयपुर की हैं।

समझाए मुताबिक ऋषभ ऐसा फोटो लाया जिसमें इवेंट में जुटी भीड़-आयोजक तो नजर आ रहे थे लेकिन पत्रिका का बैनर आदि नहीं। पेज दो पर पांच कॉलम का फोटो-कैप्शन के साथ लगाया जिसमें गट्टानी ग्रुप, श्रद्धाजी और उनकी टीम के सभी लोगों के नाम थे। फोटो कवरेज देखकर उन्हें विश्वास नहीं हुआ। ऑफिस में आभार व्यक्त करने आईं तो उन्हें समझाया कि उदयपुर और झीलों के प्रति हमारा भी दायित्व है। हमारी मार्केटिंग टीम और यूनिट हेड धीरज त्रिपाठी खुश थे तो इसलिए कि गट्टानी ग्रुप से साल भर बिजनेस मिलता रहता है।

चेतक घोड़े की नई प्रतिमा लगाई मिराज ग्रुप ने :

चेतक सर्किल पर महाराणा प्रताप के चेतक घोड़े की प्रतिमा लगाने का मिराज ग्रुप ने निर्णय लिया। मिराज ग्रुप का उदयपुर के विकास और आर्थिक प्रगति में बड़ा योगदान रहा है लिहाजा उनकी इस घोषणा का शहर में स्वागत किया गया। भास्कर ने भी चेतक घोड़े की प्रतिमा को लेकर खबरें देने के साथ ही काउंट डाउन शुरु कर दिया। अंतत: वह दिन भी आया जब चेतक की प्रतिमा का अनावरण हुआ।

इस प्रतिमा अनावरण के दूसरे दिन ही शहर के लोगों की आम राय यह सामने आई कि इतिहास में जिस तरह चेतक का वर्णन है, प्रतिमा एकदम विपरीत है। मार्निंग मीटिंग में जब चेतक की प्रतिमा को लेकर लोगों की प्रतिक्रिया पर चर्चा हुई तो मैंने इसे 'भास्कर मुद्दा' के रूप में अभियान चलाने का फैसला कर लिया। अभियान में मुद्दा यही था कि चेतक के नाम पर खच्चर की प्रतिमा हटाकर नई प्रतिमा लगाई जाए।

अभियान के तहत हर दिन पाठकों के फोटो के साथ उनकी राय भी प्रकाशित करते थे। इस अभियान से मदन पालीवाल नाराज हो गए। चूंकि मिराज ग्रुप राजस्थान में बड़ा विज्ञापनदाता भी रहा है तो पालीवाल ने सिटी चीफ प्रकाश शर्मा के माध्यम से यूनिट हेड धीरज त्रिपाठी को अपनी नाराजी से भी अवगत कराया। पालीवाल का कहना था खच्चर वाला अभियान चलाने से बेहतर होता कि सम्पादकजी मुझसे बात कर लेते पर तीर तो कमान से निकल चुका था। विभिन्न संगठन भी मैदान में उतर गए। दो-तीन दिन बाद तो उस मरियल से घोड़े वाली प्रतिमा को चादर से ढक दिया गया था।

मदन पालीवालजी ने सार्वजनिक रूप से चेतक प्रतिमा के नए सिरे से निर्माण की घोषणा के साथ ही शहरवासियों से जानना चाहा कि कैसी प्रतिमा चाहते हैं। भास्कर ने फिर पाठकों के सुझाव आमंत्रित किए। ज्यादातर की राय थी कि मोतीमगरी में प्रताप स्मारक पर जिस चेतक पर महाराणा सवार हैं उस मूर्ति जैसा ही चेतक निर्मित किया जाना चाहिए। पालीवाल ने भी जनभावना का सम्मान करते हुए वैसी ही चेतक प्रतिमा के निर्माण की सहमति दी। कुछ महीनों में जब नए सिरे से प्रतिमा का निर्माण सम्पन्न हो गया तो पालीवाल परिवार के आशीर्वाददाता-सुप्रसिद्ध संत मोरारी बापू के हाथों मिराज ग्रुप ने चेतक की प्रतिमा का लोकार्पण कराया। चेतक सर्किल पर स्थापित इस विशालकाय चेतक प्रतिमा को देखा जा सकता है।

पहली बार उठावने का फोटो 8 कॉलम में :

भूमि हत्याकांड को लेकर सिंधी समाज आक्रोशित तो था ही, उसकी हत्या के तीसरे दिन उदयपुर में परिजनों ने समाज की रस्म मुताबिक उठावना रखा था। जिसमें इंदौर से भी समाजजन आए थे। हमने स्टॉफ की मार्निंग मीटिंग में उठावने को कवर करने की प्लॉनिंग बनाई। फोटोग्राफर (शायद) ऋषभ जैन को हिदायत दी कि उठावने का बड़ा फोटो करना है, जिसे आठ कॉलम में छापेंगे। फोटो में पीड़ित परिवार सहित समाजजनों के चेहरे स्पष्ट दिखने चाहिए।

बाकी स्टॉफ को शामिल होने वाले प्रमुखजनों के नाम, उनकी प्रतिक्रिया आदि नोट करने पर लगाया। मैं खुद भी उठावने में शामिल हुआ था और सिंधी समाज की खबरों के मामले में सहयोग करने वाले कलर-पेंट व्यवसायी कालरा परिवार के जितेन्द्र कालरा ने समाज से जुड़ी खबरों के मामले में खूब सहयोग किया।

उदयपुर में भूमि के उठावने में इंदौर से भी समाजजन शामिल हुए थे। इंदौर में हुए उठावने में शामिल समाजजनों, राजनीतिक दलों, प्रमुख संगठनों के पदाधिकारियों वाली खबर भी प्रमुखता से लगाई थी। अगले दिन तो सिंधी समाज ही नहीं स्थानीय अखबारों में भी भास्कर ही चर्चा में रहा। समाजजन कवरेज की वजह से तो बाकी अखबार उठावने का आठ कॉलम फोटो छापने के कारण भास्कर के प्रयोग की चर्चा कर रहे थे। (मेरी पत्रकारिता सीरिज के नियमित पाठक संतोष कालरा ने ही भूमि हत्याकांड पर लिखने की याद भी दिलाई)

आचार्य महाप्रज्ञ के कवरेज में बाजी मारी :

उदयपुर में सिंधी समाज की तरह जैन और बोहरा समाज के सदस्य भी बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। अहिंसा पदयात्रा करते हुए जैन श्वेतांबर तेरापंथ के दसवें आचार्य महाप्रज्ञ उदयपुर में चातुर्मास करेंगे। यह जानकारी लगने के बाद उनकी यात्रा सम्बन्धी जानकारी के समाचार हर रोज देना ही है, यदि जानकारी नहीं मिले तो समाज के प्रमुखजनों से फोन पर चर्चा कर समाचार बनाएं, अहिंसा यात्रा वाले रूट चार्ट से जुड़े संवाददाताओं से नियमित समाचार मंगवाने के लिए रीजनल इंचार्ज बलदेव शर्मा को भी सजग कर दिया था।

जिस दिन आचार्य महाप्रज्ञ ने उदयपुर जिले की सीमा में प्रवेश किया उस दिन प्रकाश शर्मा की बाइक से उस गांव पहुंच गए जहां रात्रि विश्राम होना था।

भास्कर का नाम जाना-पहचाना तो था ही, महाप्रज्ञजी इंटरव्यू के लिए राजी हो गए तब कंदील के उजाले में उनसे हुई चर्चा के आधार पर लिखी यह खबर ग्रुप के सभी संस्करणों में छपी थी कि राष्ट्रपति एपीजे कलाम और आचार्य महाप्रज्ञ मिलकर किताब लिख रहे हैं। इस ब्रेकिंग न्यूज से समाज का हम पर भरोसा और बढ़ गया। जब आचार्यश्री उदयपुर आ गए तो चातुर्मास सम्बन्धी फोटो-कवरेज आदि के साथ ही उनके ससंघ के मुनि किशनलाल की स्वस्थ रहने के लिए योग आधारित किताब के अंशों का नियमित प्रकाशन भी शुरु कर दिया।

आचार्यश्री और महाश्रमणजी के विश्वस्त मुनि जयंत कुमार से रोज मुलाकात से बढ़ी निकटता का यह फायदा हुआ कि चातुर्मास के दौरान होने वाले बड़े उत्सवों, वीवीआयपी के आगमन की जानकारी पहले ही मिल जाती थी।

यह उदयपुर के इतिहास में पहली बार हुआ कि आचार्य महाप्रज्ञ ने मेरा यह अनुरोध भी स्वीकार लिया कि जब महासतिया वाले रास्ते से निकलेंगे तो कुछ देर भास्कर कार्यालय भी आशीर्वाद देने आएंगे। उदयपुर में ही आचार्यश्री अणुव्रत सम्मान भी देंगे यह जानकारी मुनिजी से मिली।

- क्रमश

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।